श्रीः ।

नटनागरविनोद ।

श्रीयुतमहाराजकुमार

रत्नसिंहजीकृत ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयमें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५४, शके १८१९.

भूमिका।

यह ग्रंथ मालवदेशाधीश प्रजापालनतत्पर महाराजाधिराज महाराजा श्री १०८ श्री राजसिंहजी सीतामऊराजधानीसिंहासनस्थके पुत्र महाराजकुमार रसिकशिरोमणि सुयशके अकूपार यथोक्तः--

दोहा–सियापुरी काशीपुरी, सिद्धदाससारूप ॥
विश्वनाथराजन्नृपति, रतनगजाननरूप॥१॥

बूँदीके कविराज मिश्रण सूर्यमलजी कृत–कवित्त।

मालवके मुकुटकुमाररतनेसतेरो, यशबहुरूप स्वांगआनतनटाँनके ॥ व्यालह्वैधराकोधूतधारेधवलीयकर, मरालह्वैसुरेनवोझब्रह्माकेविमानके ॥ हिमकरह्वैकेभवभालवनिबैठोवीर, कंबूह्वैकेअधर अँगोछेभगवानके ॥ मह्लीमालतीह्वैछत्रधारिन

कोछोगावने, मोतीहैमिजाजीमुखचूमेंमहिलान के ॥ १ ॥

इत्यादि गुणविशिष्ट महाराजकुमार श्री श्री १०८ श्रीरत्नसिंहजी विरचित "नटनागरविनोद" नाम संवत् १९१० की सालमें पूर्ण हुवा ॥

दोहा--श्रूपदासदैसिकसुखद,कीनचंद्रिकाग्रंथ ॥
रत्नकवँरातिहिंसंगते, लह्योजुसाहितपंथ ॥ १ ॥

अरु संवत् १९२० माघशुद्ध २ के दिन इस असार संसारका सुख भोग आप श्रीकृष्णकेसायुज्य लोकको पधारे। तत्पश्चात् अधुना देशांतरस्थ महाशयोंकी इसग्रंथपै अति अपेक्षा अरु पुस्तकोंकी अलभ्यता देखिके इसी राजधानीके अमात्य कायस्थकुलावतंस पंचोली उपनामक पृथ्वीराजात्मज लालाहुलासरायानुज सज्जनवल्लभ हरिहरभक्तिपरायण लालाचाँदरायजीने अपने स्वामीके यश प्रकाशनार्थ इस ग्रंथको महाराजाधिराज महा-

राजश्री १०८ श्री वहादुरसिंहजीके समयमें इस पुस्तककी प्रथमावृत्ति छापीगई अब की बार शुद्धतापूर्वक निज-"श्रीवेङ्कटेश्वर" छपाखानामें छापकर प्रसिद्ध कियाहै ॥

दोहा--कवितारतनकुँवारकृत, सीतामऊसुवास ॥
चांदरायचितयोंचह्यो, प्रभुयशकरनप्रकास ॥ १ ॥

आपका कृपाभिलाषी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई.

श्रीः।

श्रीश्री १०८ श्रीमहाराज

कुमाररत्नसिंहजीकृत-

नटनागरविनोदप्रारंभः।

श्रीगणेशाय नमः।

सवैया--जायजपोंनिजजीहहुतें, ततोकर्म अने-
नतेतुतराहूं ॥ आपअमापरुथापउथापमें, पाप
नेकहिकोपुतराहूं ॥ सुथराहुं सदैवप्रपंचकेस्वां-
में,औरसुकर्मनते उतराहूं॥दीनहौंदीनहौंदीनमहा
टनागरकेदरबारपराहूं ॥ १ ॥

दोहा-काहूकहिकेनालियो,गुरुमाहिमाकोपार॥
योंविचारिकैसेरहूं, तदपिलिखूंहियहार ॥२॥

छप्पय-जयगुरुश्रूपादिनेशजगतपाखंडविहंड-
॥जयगुरुश्रूपादिनेशतिमिरअघजुत्थविखंडन॥ ज
गुरुश्रूपदिनेश सुयशपंकजसुखमंडन ॥ जयगुरु

श्रूपदिनेश दुष्टमत बुद्धीदंडन ॥ जयजयति श्रूपअकरनहरन करनकरावनदासकह ॥ जयजय दिनेशअज्ञान हर ज्ञानकरनअज्ञानजह ॥ ३ ॥ जयजयश्री गुरुश्रूपदासनिजपंथहलावन ॥ जयजय श्रीगुरुश्रूपचारयुगधर्मचलावन ॥ जयजयश्रीगुरु श्रूप वालबुद्धीवुधदावन ॥ जयजयश्रीगुरुश्रूप दासके कुकृतनसावन ॥ जयजयतिश्रूपव्या पंकअखिलसुगुणदेनअवगुणहरन ॥ जयजयति श्रूपपंकजचरण जगवंदनतारणतरन ॥ ४ ॥ जयश्रीगुरुजगजनक सृष्टिजडचेतनकरता॥जयश्री गुरुहरिएक जगतकेपालनभरता ॥ जय श्रीगुरुहररूपहरणब्रह्मांडनिकाया ॥ जयत्रिगुणात्मकएक श्रूपमंडितछलमाया ॥ जयजयसुरेश संतनसुखद दुष्टदंडदावेदभन॥गुरु हरिहिएकमूरतिकहत जातेमैंएकत्वगन ॥ ५ ॥ जयतिसच्चिदानंद रूपअनेकविराजत ॥ जयतिसच्चिदानंदभू-

पभूपनशिरगाजत ॥ जयतिसच्चिदानंद यूपरथधर्मसुलग्गन ॥ जयतिसच्चिदानंद खलन उरदाह सुदग्गन ॥ जयजयअनंतअंतनकहत वेदशेषविधिहरसहित ॥ याहिनिमित्तमोंनित्तगुरु औरन धारतमोरचित ॥ ६ ॥ जयजयजयगुरुरूप सर्व अघओघनसावन ॥ जयजयजयगुरुरूप द्वंदपाखंडमिटावन ॥ जयजयजयगुरुरूप हरनाविषयाविषदुर्मद ॥ जयजयजयगुरुरूप दासकोदेनअभयपद ॥ जयजयउदार आधारमम विधिहरिहर गुरुएकमय ॥ जयजयतिरूपतारनतरन जयजय जयगुरुदेवजय ॥ ७ ॥ जयगुरुतेजप्रचंड वेदमरयादसुमंडन ॥जयगुरुतेजप्रचंडतिमिरपाखंडविहंडन॥जयगुरुतेजप्रचंड घोरअघओघहिखंडन॥जयगुरुतेजप्रचंड दुष्टमत दानव दंडन॥जयदीनबंधु दासनसुखद जयकुबुद्धिकेकरनलय ॥ जयजयतिरूपतारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ ८ ॥

जयगुरुश्रूपदिनेश कंजदासनप्रफुलावन ॥ जयगुरु श्रूपदिनेश पक्कसंतनमनभावन॥ जयगुरुश्रूपदिनेश सर्वजगकेसुखकरता ॥जयगुरुश्रूपदिनेश कलुष दासन केहरता ॥ जयश्रूपरूपकारनकरन जयहरि हरत्रिगुणात्ममय ॥ जयजयतिश्रूपतारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ ९ ॥ जयगुरुव्यापकरूप आदिमध्यअंतनजाके ॥ रंगनरूपनरेख ग्रामधनधामनताके ॥ वेदनजानतभेद कौंनवाकेगुणगावैं ॥ ब्रह्माशेषमहेश खोजहेरेनहिपावैं ॥ जयएकअखिलआधारजग विश्वरूपब्रह्मांडमय ॥ जयजयतिश्रूप तारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ १० ॥ जयगुरुसूक्षमरूप एकरुअनेककहावत ॥ जयगुरुसूक्षमरूप पारकोऊनहिंपावत ॥ जयगुरुसूक्षमरूपव्योममयउपमाजाकी ॥ जयगुरुसूक्षमरूपकौंनजानैं गतिताकी॥ विराटरूपगावतनिगम निजदासनदा-

ताअभय ॥ जयजयतिश्रूपतारनतरनजयजयजय गुरुदेवजय ॥ ११ ॥ श्रीगुरुमेरेइष्ट औरकोउ मिष्ट नलागत ॥ श्रीगुरुमेरेइष्ट औरकान्निष्ठहित्या-गत ॥ श्रीगुरुमेरेइष्टजेष्ठकोहूनाहिंजानूं ॥ श्रीगुरुमेरे इष्ट अनिष्ट औरै पहचानूं ॥ श्रीगुरुप्रतापम-तभ्रष्टना धृष्ट कियोसबमेटिभय ॥ जयजयतिश्रू-पतारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ १२ ॥ गुरूआदिवाराह गुरूनरसिंहकहाये ॥ गुरूरामाद्वि-जराम गुरूकछमीनसुहाये ॥ श्रीगुरुबावनरूप कृष्णहयग्रीवसुजानहु ॥ गुरूबोधअवतार ॥ रूपकारणपहचानहु ॥ एकगुरूसर्व अवतारगि-न जगपालनकरतासुलय ॥ जयजयतिश्रूपता-रनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ १३ ॥

सवैया—गुणतीनहुंतेरचनाजगकी, सबअंतरश्रूप हिछाजतहै ॥ फिरएकहिश्रूपअनेकदिखावत, त्यों फिर एकहि भ्राजतहै ॥ सोइआदिसोईमध्यअंतक-

हावत, भूपसबैशिरगाजतहै ॥ कोउभूपकेरूपते वाहरनाँ, सबभूपकोरूपविराजतहै ॥ १४ ॥

कवित्त—महिमां गुरूकी सोईहरिकीविचारिलिखूं, यामें व्यंगदूषणवतावेअज्ञजानेका ॥ दोऊकी मँहिमाको तोवेदहूनकीन्होंभेद, जाहरअखेदइतचमंचपमानेका ॥ दृष्टिमेंनआवेज्ञानचषमांचढाएविन, एकरूअनेक रूपरूपन बखानेका ॥ भूपसोहीभूपजाकोरूपहैअनूप देखो,देखवेमेंआवेसोहीजाहरहैछानेका ॥ १५ ॥

सवैया—फिरधूम्रतेहीनहैपीनपहारते, मीनकेमारगसो वतलावत ॥ तहांआदिनमध्यनअंतकहूं,रँगरूप नरेखअलेखचलावत॥किउ गावैहजारनजीभहुतेउ हारि रहेकोउपार नपावत ॥ सोइभूपअखंडविराजतहै, वुधवानसोईनरभूपकोगावत ॥ १६ ॥

कवित्त—श्रीगुरुप्रतापसांचोकहतहुनायसब, कृपाकीकटाक्षसांचझूंठधारिवोकरैं ॥ हमतोगुणी न

निगुणीहैंआदिअंतहीते, शूपकेसमीपरहैंवातेररिवो करैं॥ विद्याकोअभ्यास नअविद्याकोकरैंउपाय, महाजडमूढदेखियूंहीभिरिबोकरैं॥चतुरकीसभामेंचढैचाहवाढैसवहूकी, ॥ वित्तनहिंपासपैकवित्तकारिबोकरैं ॥ १७ ॥

संयोगशृंगारक०—ललिता पठाई लाल लाडिली विलोकिवेको,ललित लुनाईअंगअंगमेंअनेकहैं॥सोहतसुहागअनुरागभरे आननपै,भाग भरीभौंहवीच कोटि मदनेकहैं॥ एहोनटनागर तिहारी सौंहसाँची कहौं सारेभुवमंडलविधाता रचिएकहैं ॥ प्यारीके नयनअनियारे कारे कजरारे, मृग मीन कंज खंजहू तेवितरेकहैं ॥ १८ ॥ आज वनमालीएकअद्भुतउचारीबात, कछूना विचारीपैउजारीवागयारीकी ॥ जाहरजनाई बनआईनिजअंगवाँन, अधिकरिझाई लाजआइना हकारीकी ॥नटनागरसागरसमीपआयबैठेतोऊ, निपटनिशंक वातेसुनी विभचारीकी ॥

सवनतेप्यारीप्रियाप्रियाहूतेप्यारेप्राण, प्राणहूतेप्या रीमोंकोप्रीतिप्राणप्यारीकी ॥१९॥ एकछिनयाम समयामदिनमानसम, दिननिशिमानमाससंवत्स- रचावैनाँ ॥ सोहीखाँनपाँनन्हानगाँनमोंअग्यानसों गो, तेरोहियध्यानछाँडआँन दिशिजावैनाँ ॥ पार सीपुराणरूसितारआदि साहित्यलों,चित्तकोरचाऊँ तोपैयाकेमनभावैनाँ ॥ हाहा नटनागर तिहारीसौंह साँचीकहौं, रावरोवियोगमोंकोश्रीधरदिखावैनाँ२०

सवैया—इततेउततेनितबाहुकेद्वारपै, प्रेमतुरंग कोटूम्योंकरै॥ नहिंऔर त्रियानकीओरलखै, झिरके तोऊदाँवनझूम्योंकरै ॥ छिनदेखेविनानटनागरको, चितवासअकाशनघूम्योंकरै ॥ वह प्यारीकेकंठवि लूम्योंकरै, मुंहचूम्योंकैरत्योंहीझूम्योंकरै ॥ २१ ॥

कवित्त—सागरस्वरूपको उजागरलख्योंमैंआज नटनागरनागरकोभूमें ज्योंकरेसमां ॥ श्रवणसुनीहैं सतीसरस्वतीपारवती, सचीहू विरंचिपचीहोयनहु-

ईरमां ॥ यक्षीनगीपन्नगीरुगांधरवीकैसेकहौं, हारीम
तिहेरहेरजकसीरहीजमां ॥ कीरतिकुमारिजाकेस-
मताविचारीनारी, रतीकरतीकोरूपतिलसीतिलो-
त्तमां ॥ २२ ॥ वृजकेसरोवरमेंपैजवृजनंदनकी ॥
वृक्षगुरुभोगनके तटपरवृंदहैं ॥ आनंदअद्भुतनट-
नागरमैंकहाकहूं, रचनांअनोखीऔरसुखसबफंद
हैं॥ आनँदकेकंदपिकचातककाविंदसब, याहीगुण-
गायबेकोवाणीमतिमंदहैं ॥ लहरतरंगजामैंसुखकी
अनेकउठैं, ब्रजबालाजलजमेंभ्रमरमुकुंदहैं ॥
॥ २३ ॥ बाहरविहरिबेकी बांनकोवहाईतोऊ, विर
हवियोगव्यथाविवशवढीरहै ॥ कानकुलकानकी
कहांनराखिबेकेकाज, करतकठोरकंठआहतो कढी
रहै ॥ पचिपचिपाचिपाचिमों नहींपढाऊंजोपै,
प्यारेकीप्रशंसायहैरसनापढीरहै ॥ नटनागरचतुर
चवावनचलावेज्योंज्यों, तेरीचाहमेरोचित्तचौगुनी
चढीरहै ॥ २४ ॥

सवैया—श्रीव्रजचंदगोविंदगुणी, जगवंदहैंजाहर फंदकोफंदहै ॥ कुंदकेहारहियेविहरैं, अरविंदसेलो यनरूपकोद्वंदहै ॥ मंदमहामुसुकानकरै, नटनागर नागरवृंदकोइंदहै ॥ छंदकोछंदहैंजिदकोजिंदयो, नंदकोनंदअनंदकोकंदहै ॥२५॥ काहुपैशीशगुँथा वतहौ, नटनागरगूंथनकेसमरोरी ॥ काहुकेपांय लगावतजावक, काहुपैआपलगावैंवुँदोरी ॥ झांकत ताकतखेलखिलावत, बैठैंउठैंमतिछंदमेंबोरी ॥ काहेकोनंदकिशोरभयेतुम, क्योनभयेललानंद किशोरी ॥ २६ ॥

कवित्त—गुणगरुवाईमंदहाससुघराईलिये, चोप चतुराईनटनागरचुनाँकरैं ॥ कछुलरिकाईजामेंझूं ठकुटिलाईसंग, मृदुलमहानबातैंसुनिधूधुनाँकरैं ॥ भौंहकीवँकाईत्योंझँकाईतिछैनैननकी,प्रीतिकेपयो धिवीचचित्तकोसनाँकरैं ॥ देशपरदेशतथानगरउ जारवीच, तेरेगुणआठोंयाममोंमनगुनाँकरैं ॥२७

एकतोघटाअनूपनागरशिषीकीकूक, विद्युतलता केरूपमितछबिन्यारेहैं ॥अरुणदुपट्टाजासोंसुगंधल पट्टाउडै, मारुतझपट्टादेतगतिकोविसारेहै ॥औघट घटापैगिरैतिनकोथटासोहोत, चंद्रमुखऊपरलटायें नागकारेहैं ॥ आजयाअटापैदोऊकरमेंघटासेपैन कौनधौंछटासेहायकटाकरिडारेहै ॥ २८ ॥ चंद्रके उजारेमतवारेनटनागरत्यों, शीतरुसुगधमंदफंद बंदपारेरे ॥ तानकीतरंगसंगमधुरमृदंगधुनि, अंग अंगमदनउमंगबलधारेरे ॥ जारेउरकठिनमहारेयों प्रहारेहारे, प्यारेअबन्यारेव्हैके चित्तसोंबिसारेरे ॥ रातवाअटापैदोऊकरमेंपटासेपैन, कौनधौंछटासे हायकटाकरिडारेरे ॥ २९ ॥

सवैया–साँवरेरंगरँगीसबरीकोऊ, ऊजरीनाँव्रज गाँवरेवारी ॥ साँवरोरूपबस्योदृगमें,सबसांवरोदीख तहैइकसारी ॥ उद्धवसांवरीरैनिचढी, नटनागर सोंकहाव्हैगईकारी ॥ सांवरेरंगरिझायलई, हमसांवरे

रंगकीरीझनहारी ॥ ३० ॥ ह्वैहैमहा उपहासहहा, गुरुलोगसभाविचकाविधिजैहैं ॥ जैहैंनहींतोवहीं कुलकांनरू, बांनपरेपरकोसिखदैहैं ॥ दैहैंलला नटनागरकेशिर, अंककलंककोशंकनपैहैं ॥ पैहैं कहासुनयाब्रजमें, दिनएकयाढ्केमेंजाहरह्वैहैं ॥ ३१ ॥ चवावकेयेब्रजलोगलबार, हँसेसोहँसेसोहँ सेईहँसे ॥ फिरबाजेतेबाँसुरीनेहकेफंद, फँसेसुफँ सेसुफँसेईफँसे ॥ चषहीतेलखेनटनागरहीय, बसे सुबसेसुबसेईबसे ॥ कुलकानरूलोगकीलाजभटू, सोनसेसोनसेसोनसेईनसे ॥ ३२ ॥ तुमकाहेकोझोर करोइतनी, नहिंकाजहैलाजाहियेमाढिबेकी ॥ नी तअनीतनमानतहूँ, दरकारनप्रीताविनापाढिबेकी ॥ वदनामिकेसिंधुमेंबूडचुकी, नटनागरकौनकहै काढिबेकी ॥ डाकनवारोचढ्योशिरपै, जबलाजक हाखरकेचाठिबेकी ॥ ३३ ॥ भोराहिआएहोभागब- डे, अदभूतदशानटनागरवारी ॥ कंकमजागज्ञ

ग्योउरपैरु, ललाटलगीहैरीरेखनकारी॥ आंखनला
लरुलागेनखक्षत, आंगीकीटूटगईकसनारी ॥ पें-
चखुलेजमुहातचले, यहभांतिकहातुमकुंजवि-
हारी ॥ ३४ ॥

कवित्त–प्रातअलसातगातआलससुनींदेआत, झू
मतझुकातबातपियेमनुहालाके॥पेंचफहरातशीश
जावकलखातभाल,पीतपटलुटेसँगजागेब्रजबालाके
काहेकोछिपातइतनींकहूँमजानीजात, चिन्हउपटा
तउरविनागुणमालाके॥नटनागरठौरठौरदेखिएतन
कऔर,ललीमुखदागज्यूंहीदागमुखलालाके॥३५॥
कांनतकींचुरनिपैचुरनिकेफंदरचे, बेणीसीअलकनै
नमीनगिरधारीके॥ हिर्नमनकेसपासनागरविथुररही
अँगियारीभरेपैअनारीराधाप्यारीके॥ भौंहधनुचक्र
नथचीताकटिनैनबाज,नरकोईलाजकेसोकाजहरे
नारीके॥नटनागरकाननअधीरकियेबाढिचले, यो-
बनकेराजसाजमदनशिकारीके ॥ ३६ ॥

सवैया–कीजैसबैनटनागरउद्धम, तोसेअन्या-
ईकोकौनपतीजे ॥ तीजेसुनीजवधूरवाप्रीति, कछू
विभचारकोमारगलीजे ॥ लीजेसबैसुननेहकीरीति,
सुगोकुलमेंपगफूंककेदीजे ॥दीजैगँवाययूंहायबला-
यलों, क्योंअशनाहकोजाहरकीजे ॥ ३७ ॥ नहीं
सुतमातपिताअपनेघर, नेहमेंभूलगईसोगई ॥
ब्रजमेंयहटेरकह्योअबते, कुलकानकोसीखदईसो
दई ॥ नटनागरयाअपलोककिगांठिमें, शीशपै
तोकलईसोलई ॥ सबगाँवकेबावरेनामधरो,हम
श्यामसनेहीभईसोभई ॥ ३८ ॥ नटनागरबालस
खीकोकह्यो, अरीबांसुरील्यावरीमैंनाहिंल्यावों
आवरीआवकाकामहैजू, तुमवांहीरहोंकितोगारी
सुनावों ॥ नहरीउतहीभलठाढीरहो,इतआवोतोतो-
कहचंद्रबतावों ॥ योंकहिकेहरिहाथछुयो, भजि
आहरेउहरेमैंनाहिंआवों ॥ ३९ ॥ नटनागरआये
अन्हातथीराधे,हियेउमडीलखिकामकला ॥ इतटेर

लियेकहियाविधिसों, वडभागहमारेसोआएचला ॥ अबहाहाकरौंतवपाँयपरौं, इहैमानियेतौसबकैंहैंभ लाअहोयादहबीचगिरोहैछला,सोनिकारिदेहौनँदजू केलला ॥ ४० ॥ हमजातगँवाइअजातभई, कुल कानतेआंनलजैतोलजो ॥ हमशंकतजीपि-तुमातहुकी,मोहिंनाथहूत्रासतजैतोतजो ॥ नटनाग रकीनगलीतजिहूं,गुरुलोककेवाकगजैतोगजो॥व्रज मंडलमेंबदनामीकोढोल,निशंकव्हैआजबजैतोवजो ॥ ४१ ॥

कवित्त—त्रासिबो सदाई नटनागरगुरूलोगनते, कैसेहू विलोकेहोतलोकलाजनसिबो ॥ कसिमन इंद्रिनविलसिबोनहोतकछू, फैललखिकान्हरकेनेह हूमेफँसिबो ॥ हुलसिविचारैयामेंहोतहैचवावदे-खो,सहबोपरैहैजबगुरूजनहँसिबो ॥ काजरकेगेह माँझबासिबोविकटऐसो, निपटनिठुरतैसोयाव्रजमें बसिबो ॥ ४२ ॥ दाउकीवरसगाँठआजवाज

बाजैंनेक,नौतीवृषभानुललीबैठपीसँवारेके ॥ ताही कोजिवांयकैउठायसमुझायसखी, लैगईदुतियभौंन भीतर पिछारेके ॥ नूपुरघमंककरघूंगुरझमंक, नट नागरठुमक पदरमकअखारेके ॥कारेनँदवारेकोसि धारेजीतवेकेकाज,बाजतनगारेमनुपंचशरवारेके ॥ ॥ ४३ ॥

सवैया—यमुना तटपै नटनागर जू, बँसुरी बटु पासहमेशरहाकरै ॥ वामुगधाकुलवानकहाकरै, नै-नकेसैनकेबाणवहाकरै ॥ यालिहिंडोरामहाकरैफै ल, चढायवेसंगवात्रीतेफहाकरै ॥ ज्योंज्योंगहाकरैटे कविहारी,त्योंनारीअनारीतेहारीहाहाकरै ॥ ४४ ॥

कवित्त—यमुनाकेसंगनमेंकुंजकेविहंगनमें,वृंदा-वनवृंदनमेंअंगएकह्वैरह्यो ॥ मधुवनपुंजनमेंमधुक रगुंजनमें,मुग्धनकेमनमेंअनोपओपदैरह्यो ॥ नट नागरअंगनमेंभवनउमंगनमें, रंगसवरंगनमेंरंगरूप लैरह्यो ॥ तीजकीतरंगनमेंनवलाकेअंगनमें, सोस-

नीसुरंगनमोंइयाँमरंगन्हैरह्यो ॥ ४५ ॥ हारउरडार वारसुंदरसँवारकर,मारचक्रजैसीनथथारमेंपरीरही। लकुटीमुकटपटपाटकोझटकपरो,कुंडलकटकआँखआँखतेअरीरही ॥ सुघरसँवारीसारीडारदी बिहारीदेख,डरीनाँपरीनाँचौंकचकितखरीरही ॥ नागर घरनदेखिघरनिबिसारिगए, अधरधरनतेउधरनधरी रही ॥ ४६ ॥

सवैया—हाअबकैसीकरूंसुनबीर, सुवामृदुहाँस हियेधँसगी ॥ अबयाव्रजमेंकुलवानकहावत, तेसबरीलखिकैहँसगी ॥ ननदीढिगआयनचायकैनैन,कछूकहवेनभ्रुवैंकसगी॥बचगीसबमेंविपरीतकथा,नटनागरफंदनमेंफँसगी ॥ ४७ ॥ महासुक्षमप्रीतिको मारगहै,कोउजानैकहाअनुरागेनहीं ॥ उनहीकोविचारियेयाविधिसों, मनोंसोवतनींदसोंजागेनहीं ॥ नटनागररीतिनजाँनतहौ,विरहानलदाहसोंदागेनहीं॥ तिनकोजगजीवनजानोवृथा,परप्रेमपयोधिमेंपागेनहीं ॥ ४८ ॥

कवित्त–चषयेचहतचाहमित्रकोविचित्रचित्र,पूर-
णनहोतश्रोत्रवाकीसुनबातते ॥घ्राणचहैनासिकासु
वाकेअंगरागहूको,त्युहींचहैरसनाउचारगुणगाथते।
चाहतहैपाँवसुअटनउतआठोंयाम, त्योंहीत्वचाचा
हतहैस्पर्शप्यारेगातते ॥ नागरदरशकछुपरशभ-
योनहाय,विवशगयोहैमनमेरोमेरेहाथते ॥ ४९ ॥

दोहा–मोंकोकछुसूझतनहीं,तूकाबूझतबाल ॥
इनआंखिनमेंछ्वैरह्यो,कारोपीरोलाल ॥ ५० ॥

कवित्त–पूछेनटनागरकादेखोमैंचारित्रऐसो, मा
नोगिरिभूषणसोमेरेउरछ्वैरह्यो॥वेरसँझलौकीवीचना
हिनपिछानपरो, किधौंमृगराजवृजराजरूपज्वैरह्यो
पीतघनश्यामयुतसुरँगउठायेकछु, विद्युतलतासो
यालताकेवीचख्वैगयो ॥ केहरियाहरिहोनजानोंक्या
रकेतकीमें,मेरीदोउआँखनमेंकारोपीरोह्वैरह्यो ५१
कारेविनअंजनहींखंजनतुराकेगंज,कंजनकुरंगमीन
भंजनसँवारेक्यों॥ कचकुचकंमर पन्नगिचककेहरी

सी,जापैकेहिकाजआजअंगरागपारेक्यों ॥ सुघराईसागरसुनेहैनटनागरको, सहजशृँगाररीझिउद्यमये धारेक्यों ॥ रूपकेबनाइवेको रूपकेअभूषणते,गोरे गोरेपाँयकारेकारेकरडारेक्यों ॥५२॥ रहैंदाहैंऔरै घातकहैंदानऐकोबात,रहैंदातुसाँदेनालकछूनाकहैं दाहैं ॥ औदाहैंहमेशानितजैंदाहैंउसेहीगली, ललीवृषभानुदीगुलामहुवारेदाहैं ॥ उपमाकहैंनानटनागर वोनंदनँदा,तातेशशिअंकबीचभौमसरमैंदाहैं ॥ निचलारहैंदाकरहैंदाससकैंदावह,बैदालखितैदासुधि भूलभूजैंदाहैं ॥ ५३ ॥

सवैया—मारनमानतमेरोमतो,सुमनोमनमेंअलि हैमतिमंद ॥ सिखावनसासरेहुकीसुनीन,सुनीमुरलीज्योंबजीव्रजचंद ॥ दिनाढुइबीचादिखायगीसो, नटनागरकेबाढैहैछलछंद ॥ डरैगीखरेनटरैगीकबु, तूपरैगीजरूरमुकुंदकेफंद ॥ ५४ ॥ आजगईनट नागरजू,जहाँकीरतरानीरहीपरबीनें॥देखीजहाँवृष-

भानुसुता,गजगामिनिकेहरिसीकटिखीनें ॥ खोज थकीसवरेजगमें,उपमाहृगआननकीहैनवीनें ॥ द्वेद लकोअरविंदविराजतु,पूरणचंद्रकोआसनकीनें ५५

कवित्त—जादिनकढोहोमेरीखोरहूकेपोरआगे,तादिनगडोहोमेरेमनउरदीठमें ॥ ताहीछिनलोकलाज ऊपरपरीहैगाज,गुर्जनसमाजआजसहोंशिरधीठमें॥ नागरतादेखिनटगारभईहूंलटू,भटूमैंपठायेप्राणपाँचहूवसीठमें ॥ नीठनीठसबहीकोपीठदैनिहारचोकरूँ,वोरिगयोढीठहायमटकेमजीठमें ॥ ५६ ॥ जादिनलखेहैंयमुनाकेबाँकेकूलनमें, फूलनकेफाग शोभानिपटनवीनीहैं ॥ तादिनतेछविकीतरंगवढी मेरेअंग,कोटिकअनंगहूतेरूपगतिखीनीहै ॥नटनागरसागरस्वरूपकोउजागरहै, हायमेरेनेत्रनकीउप मासुछीनीहै ॥ मेरेनैनवानसीथमृत्युलोकहीकेवीच,रूपविधिरावरेनेदवगतिदीनीहै॥५७॥गोकुलकी गैलमेंगोपालग्वालगोधनमें, गोरजलपेटेलखेऐसी

गतिकीनीहै ॥ चौंकिचौंकिचतुरचवायनचलाव
तहै,रहीचुपचापचोपचित्तमतिचीनीहै ॥ हाहाक
रहारीनटनागरबिहारीतैंहू, उपमाविचारीजेबहुतग
तिझीनीहै ॥ मेरेनैनबानसौंथिमृत्युलोकहीकेबीच,
रूपविधिरावरेनेदेवगतिदीनीहै ॥ ५८ ॥ पंकयोक
लंककोतोलाग्योहैनिशंकअंक, शंकतजिसारीप्या
रीहियनाहहरतू ॥सारेवृजवासीकेबुराईकारिवेकीबा
नि,काननकैरगीअवगतमगहरत ॥ रूपगूणसागर
निहारनटनागरको, बैरिनकेबोलसुनिनेकनलहर
तू ॥ यावृजकेलोगनबुराईतोऊढाईशीशं, बिहँस
विहारीसंगबावरीविहरतू ॥ ५९ ॥

सवैया—देहौंसबैगृहकाजपैचित्त, रुवित्तवटोरनमेंसु
खपैहों॥पैहोंगुरूजनकेसुखगैलमें,गैलमेंकुंजकेभूलि
नजैहों॥जैहोंसदायमुनाजलको,थलकोगउछाँडिभ
लेघरऐहों॥ ऐहोंनहींनटनागरभीनते,पानतेपानन
पाननदैहों ॥ ६० ॥

कवित्त–भोरउठभौंनतेगयोहैवृषभानुवोर,लखेवर-
जोरचषविलखविहालभो ॥ तादिनतेखाँनपाँनगाँ
नमुरलीकोगयो, हालसबभूलमनवाकेनेहजालभो
गोधनगोपालबालगोकुलगलीकेगैल,भूलयमुनाके
कूलमहामोहतालभो ॥ अंजनाविनाहूमनरंजनटना-
गरजू,नैनकंजखंजनसेनिरखिनिहालभो ॥ ६१ ॥
आजसुकुमारीमैंनिहारीवृषभानुसुता, नारीकोवि-
चारीनीकीशोभाकेअगारते ॥ सुरीअरुकिन्नरीपरी
हूविलखायपरी, नगीकीभगीहैचाहरूपगुणसारते ॥
नटनागरनैननउजागरदिखायदेहौं, चलीहातसात-
कविहायनिजवारते ॥ वसनवयारतेविहालहीन
जानीगई,वाजूवंदहारतेयावारनकेभारते ॥ ६२ ॥
प्रीतमविहारीप्यारीप्रेक्षमेंपरोक्षदोउ, प्रीतिनहिंजा
हरउजागरछयेछये ॥ चित्तचिकनातनलखात
नविख्यातनेह, दोउदोउवारेफिरैंहितमेंठयेठये ॥
नटनागरनागरीकीऐसीरीतिआपसमें, सारेवृजवा

सिनतेरहतनयेनये ॥ दोउनकीदोउओरदेह पैनदेखपरै, नैननमेंदेखनतेनेहकेभयेभये ॥ ॥ ६३ ॥ एरेनँदवारेकारेनिपटानिरंकुशहै, कुटिल कुरीतिऐसेछन्दसीख्योकोसोंरे ॥ नेहकोननेमनी केजानतहैन्यायकहों, गोधनगोपालतथादेवद्विजसो सोंरे ॥ प्यारेप्रेमपंथकोतैन्यारेव्हौनिहान्योनाहिं, एरेनटनागरपुकारकहोंतोसोंरे ॥ नीतजोपढैतो वामेहोतहैप्रतीतरीत, प्रीतजोकरैतोवाकीरीतपढ- मोंसोंरे ॥ ६४ ॥

सवैया—निशिवासरप्रेमको नेमलिए, जियराखर हीपियकीबतियाँते॥ताछिनसुंदरसोनभए,पियआ- गमजानिलियोपतियाँते॥ नटनागरतेअँगनाअँगना महि, दौरामिलीविरहाघतियाँते ॥ कंठतेओरनबा तकढी;सुलगायरहीछतियाँछतियाँते ॥ ६५ ॥

कवित्त—चंद्रअरविंदरमामंदलगैजाकेढिग, वां- णीपछतानीदेखजाकीबुधवारीपै ॥रुद्राणीअरधअं-

गउपमांवनैनआछी, त्योंहीशचीशोभतीनगढपत्नी कारीपै ॥नटनागररतिहूकीसूरतदिखातनाहीं,वोहू पतिहीनखीनमहादुखभारीपै ॥नागसुरनरीनारीलो यननिहारीजेती, सारी वारडारीन्यारी कीरतकुम रीपै ॥६६॥ मैंतोहितमातीअनुरागसोंअथातीरवि, जानीनहिंजातीरातिसाँझकीफ़ज़रकी॥ नीठपियपा येदौरिछातीसोंलगायलाय, चंद्रमुखप्यारेपैचकोरि ज्योंनज़रकी ॥ नटनागरमेरेभौंनछाएहैंउछाहयुत, औरशोभाहोगईहैकलतेअजरकी ॥ एरेघरियारी तूतोविनामौतमारीहाय, बज्रकीसीलागीमेरेमोंगरी गज़रकी ॥ ६७ ॥

सवैया—नितजायोकरोयमुनातटको, तथागोध नसंगसिधायोकरो ॥वँसुरीवटपासविलासकरो,वँसु रीविचगाँनसुनायोकरो ॥नटनागरजाविधिव्योंतव- नै, सुधनेकगरीवकीलायोकरो॥ चितचाह्योकरोम- नभायोकरो,छिपआयोकरोमिलजायोकरो ॥६८॥

इतगोधनसंगसखामिलकै, अपनीयहखोरहूजैवोक
रोमिलबोनबनैनटनागरजू,तोउबाँसुरीमेंकछुगैवोक
रो॥ब्रजकेविचमारेलबारनकी, जोकहैंकछुतोसुनलै
वोकरो॥सुखयादुखहानिरुलाभहमैं,अपनीतोजरा-
लिखिदैवोकरो६९सोचतहूमैंखडीकबकीअब, हाय
मैंजायकहाकहिहूंघर ॥यादुखदेहदशाबिसरी,अरु-
आवतबारहिबारहियोभर । लाजजहाजडबोयदई,
नटनागरनेकनिहारतहीपर, मंदहँसीविचफंदसीपा
रिकै,इंदुसोंमोहिंगोविंदगयोकर ॥७०॥ आजसखी
मैंलखीनिजनैनन,ज्योंनलखीरुसुनीजगरीती ॥ ने-
कउछाहसुने नटनागर,होतसँकोचगुणैगुणभीती ॥
नेकउमंगउठैउरअंतर,होतमहामिलिबोदुखजीती॥
योवनऔशिशुताविचबालके, प्रीतिमोंवैररुवैरमों
प्रीती ॥ ७१ ॥

कवित्त—आईदौरदूरतेतिहारेदिखलावेकाज, देखतवनेगीनाहिंऐसीछविवारीते॥कारेकारेबादरकढेहैंत्रिकुटाचलसे,विद्युतलताकेहैंपताकेधारभारीते॥देखनटनागरकीसौंहजोकरूँहूँतोसों,पिकरवमोरशोरघोरघटाकारीते॥यमुनाहैन्यारीजाकेदेखतटभारीआली,आजकीछटारीचढनिरखअटारीते॥॥७२॥श्यामश्यामबादरयेआवतइतैकोअब, धूररहीपूरसोईनेकनानिहारीतैं॥विद्युतको जोरजाकेसंगशोरमोरनको,चातकरुकोकिलापुकाररहीधारीतैं।सौंहनटनागरकीऔरहीछवीहैआज, गरजपरतबूंद उठीदोरआरीतैं॥मैंतोगईवारीऐसीनांहिननिहारीवीर,आजकीछटारीलखिचाढ़िकैअटारीतैं॥७३॥

सवैया—वयसंधिकोजोरभयोतनमें, सबसौतनकेउरसालठयो॥ नटनागरलालनिहालभयो,सुरनागरिकोलखिगर्वगयो॥ मुखचंद्रकोपेखिअनंदगँ-

वायके,इंदुप्रकाशतेमंदभयो ॥व्रजराजकेजीतवेका-
जमनों,रतिराजनयोइकशस्त्रलयो ॥ ७४ ॥

कवित्त—छलसोछबीलीआजछैलआविलोकन
कों,छराहूउतारधरेपायरवसनते ॥ सखिनकेसंगमें
कुरंगनैनीपैनीमति,दूररहीठाढीचाहचातुरफँसनते
॥ नैननटनागरकेऔंचकापरेहैंआय,हायकहिबैठग-
ईगुर्जनत्रसनते ॥बत्तीसोंदशनतेयोंरसनाकोदाबिर-
ही,रसनाकोदाबिरहीपल्लवदशनते७५ साँकरीगली
मेंआजललीवृषभानुजूकी,जातयमुनाजलकोशो-
भाकेलसनते ॥ ताहीगैलछैलनटनागरजूआइगए,
हँसनदुहूँकोभयोभृकुटीकसनते ॥ नंदनिजगोधन
मेंताहिछिनदेखिपरे,लुकेनिजवासदोउमानोभैअस-
नते ॥ बत्तीसोंदशनतेयोंरसनाकोदाबिरही,रसना
कोदाबिरहीपल्लवदशनते ॥ ७६ ॥ नायनहवायकै
गुसायनकेपाँयझावै, उझाकिउझाकिउठैवाकरलस
नते॥ताहीछिनसखीलायताकरुपोशाकधरी, ठाढी

हैश्रृंगारसाजेसहजेहसनते ॥ नेहीनटनागरअटारी पैचढ्योछिपाय,छाँहलखिनाहकोंलुकानीत्योंबसन ते ॥ बत्तीसोंदशन० ॥ ७७ ॥ लोयनातिहारेआ-नउपमानधारैआज,मानोंद्वैसिवारबीचकंजपत्रसक रे ॥ कैधौंमकरध्वजवनायरूपमीनहाको,नटनाग रपाटजालवाहनद्वैपकरे॥ कैधौंरतिराजआजबानि-कैशिकारीमीर,खंजनद्वैडारेपिंजराकेबीचअकरे ॥ कारेघुँघुवारेवारबीचमतवारेनैन,मानौउनमत्तद्वैजँ-जीरनसोंजकरे ॥ ७८ ॥

सवैया--जानेनआजलौंऐसेविषाददा, द्वैकदिना तेकितेवढचाले ॥ मानतकैसेभयेबरजोर,मतंगये मैनकेहैंमतवाले ॥ सोहैंललानटनागरकी,विषरूप वियोगकेहौदविशाले॥काहेप्रतीतकरीइनकी, इननै ननहायघनेंघरघाले ॥ ७९ ॥

कवित्त--देखीनटनागरअनीतरीतआँखिनकी, अंगसवहीतेमंजुअतिवरजोरहै ॥ मृदुलमहाहैगति

सुक्षमलखातनाहीं, रदनकरीज्योंजाकोअभिप्राय ओरहै ॥ढीलीढीलीभौंहतररहतलजीलीहहा,तीखी तीखीदेखियेअनोखीसीखीदोरहै । कारीकजरारी ढाँपीरहतविचारीतोऊ, हेतुसुकुमारताकोकारज-कठोरहै ॥ ८० ॥

सवैया—हेवृषभानुललीहगएते, लडेतेकियेकहा केलकीफूली ॥तेरेयासेजविनोदमेंबावरी,मेरेलला कीकलासबभूली॥वानटनागरकेचरणोंतल, ताछि-नऊडिकितैगइधूली॥ज्योंपरैदूरित्योंपीछोचितै, सु तिरछेसेनैनसनेहकीशूली ॥ ८१ ॥ जबतेयहबान कुबानपरी,तबतेकुलकानदईसबछ्वै ॥ नितमित्रके रूपनिहारिबेको, पलतेपलनेकगईनहिंछ्वै॥समुझाय थकीनटनागरजू,विनऔसरहीउमहेचलच्वे ॥ चष रूपखिलोनेंकेधारिवेको,हठरूपभयेमनुबालकद्वै ॥ ॥ ८२ ॥ सुनप्यारीसुजानतिहारेहगांनमें, अंजन काहेकोसारिवोहै॥उलटावनचंचलखंजनसे,यहभौं-

हत्रिवंकनयारिवोहै॥ सवहावरुभावलियेसँगही,ति
रछीसीचितौंनक्योंधारिवोहै॥ नटनागरकेनकढेन
टसाल,एसूधोनिहारिवोमारिवोहै॥ ८३॥

कुंडलिया–आँखेंजादिनतेलगीं, जगीविरहकी
ज्वाल॥अरीठगोरीतैंठगे,नटनागरनँदलाल॥न०।छै
लपनसवहीभूले॥ कृशितभयेतनताप,फिरतथेफू
लेफूले॥अवकीदोऊरहतनहींलगतीपलपाँखें।महा
हलाहलगहरकहरकारिडारोआँखें॥ ८४॥

सवैया–उद्धमएसोमच्यो नटनागर, श्रीवृष
भानुसुताउमहीहै॥ होरीहैहोरीहैहोरीकहै,सवझो
रीगुलालहैढोरीगहीहै॥ ओजसोआजसमाजसवै,
गहिवोरतदौरतमौजमहीहै॥ केशरहौजपैचोजभ
री,वेमनोजकीफौजसीफैलरही है॥८५॥जितख्याल
रच्योअदभूतसुन्यो,कछुजानीनहींमैंचलीगइवाग॥
जवतत्रलखेनटनागरको, कहिएसोकहोंपैलग्योउर
दाग॥सुनिमोहिंववाकिसोंचाहनहीं,एलगीहैअनोखी

सीआँखनलाग ॥ गजिगाजपरोशिरमेरेभटू,सुलगो यहफागकेशीशपैआग ॥ ८६ ॥

कवित्त–गावतगोपालग्वालबालवेजिभारमिल,डोलतप्रलापमयबोलतकसनते।ढोलकासितारवीणाबाँसुरीबजावैंधावैं,गहिगोपसखावधूहोरीकेमिसनते ॥ निकटनटनागरनिहारतहीसूखीदेह,झिपीनिजछाँहबीचवेवसनसनते ॥बत्तीसोंदशनतेयोंरसनाकोदाविरही,रसनाकोदाबिरहीपल्लवदशनते॥ ८७ ॥झोरीभरिदोरीकेऊरोरीलैमचावैशोरबौरीसीफिरैहैगोरीकहै,बैनजोरीके॥कोरीनारहेगीचोरीपीतहूविछोरीआज,लोकलाजछोरीभोरीबारीरंगधोरीके ॥ ठाढीनिजपोरीयोंउच्चारतिहैथोरीथोरी, कोऊजायखोरीनँदरायकीकहोरीके ॥नटनागरघोरीरारियुद्धहैवहोरीदेखोहोरीकेसमाजकढेकीरतकिशोरीके ॥ ८८ ॥

सवैया–प्रियप्रीतमपागेपरास्त्रियते, दिवरासोउडोलतबागनमें ॥ ससुराअरुसासपुराणसुनै, नितपा-

चोहिंयादुखदागनमें॥ नटनागरएकरहीनँनदी,सो-
उनेहकहूँचितलागनमें॥दुखभागनमेंनिशिजागनमें
दिनकैसेकढोंयहफागनमें ॥ ८९ ॥ अतिकीन्होदग-
गादुखदायनये, सु दिखावनफागकह्योजबरीझगी
मोंकोनवीनलखीनटनागर, आनवधूनकेधोखेहिधी
जगी॥ छलहीछलसोंछिपछाहनमेंढिगछूवतछैलकी
छाँहसीछीजगी ॥ गीजगीमोंजगीनेकछुईफिर, भी-
जगीसीझगीहायपसीजगी ॥ ९० ॥

वियोगश्रृंगार ॥

कवित्त–विनतीइतीकयागरीवनकीवारबार, प्रीति
कीप्रतीतिबातैंसुनकेसुनायजा॥ नटनारसागरसने-
हकोनपागोनेरे, प्रेमकेपयोधिवीचन्हायके न्हवाय
जा ॥ मेरीओरयाहीखोरनातोयामहल्लाबीच, तेरी
मोहनीमेवाँकेटेढबोलगायजा॥ नेकइतआयजाछि-
नेकइतछायजारे, दरश दिखायहायमरत जिया
यजा ॥ ९१ ॥

सवैया--सरमेंतैरवायकैबोरियेकै,गिरपैचढवायकै डारियेजू॥ कछुजानकेलेनकेनाहिंउपाय,तोसिंघग यंदबकारियेजू॥ अबप्राणतोकान्हमेंआनिरह्यो, जो उबारिवोह्वैतोउबारियेजू॥नटनागरऐंचकैधीठमहा हहाबंसीकीताननमारियेजू ॥ १२ ॥

कवित्त-बाँसुरीसमानमेरीपाँसुरीहरेकबोलैं,उठतअ साध्यपीरमनोघावनेजाज्यों॥ हायनटनागरजूआह तोकढैहैनीठ, लोयनवहैहैदोउभारेजलसेजाज्यों ॥ मारेनैनबाणऐंचिऐंचिश्रवणांतजबै,तातेसछिद्रहते निकटथिरबेझाज्यों॥ रावरोवियोगआगजाकेखाय खायदाग,व्हैगयोकरेजामेरोचूनरीकेरेजाज्यों॥१३॥ जगकीनजाहरकीयशकीनजीकीजान,जनकीननट नागरजीहव्वाबजाकेहैं॥ पीरकीनपीरपरपीरकीन गनेंपीर,परतनधीरप्रेमपुंजपाशपाकेहैं॥छीनतनछा तीछेदछिछकेरहेनछानी,छिपतनछाँहअतिछाकछ विछाकेहैं ॥ मनकेनमारकेनमौतकेनमारेहारे,हारे

हियमारेहायमानसीव्यथाकेहैं ॥९४॥ कठिनमहा-
नखानवरछीवँदूकवाण, प्राणहूकीहानीसिंघवारण
वकारिवो॥जहरहलाहलकोपानहूकठिननाहिं, त्यों
हींनटनागरनाआगतनजारिवो ॥ त्योंहीजपयोगव्र
ततीरथअहारविन, करिकैअनेककष्टदेहहूकोगारि
वो ॥ एतेसवमेरेजानसुलभलखातसारे,कठिनमहा
हैप्रीतिरीतिप्रतिपारिवो ॥ ९५ ॥ अलीमृगमीनमो
रचातकीअहीचकोर, कंजरुकमोदचक्रवाकआदि
मेंगिने ॥ वदरेमुनीरवेनज़ीरसीरीखुशरूमें,सागरप्र
वीणज़लावूवनाजितेसुने ॥ सीरीफरहादतथायूसुफ
जुलेक़ाजैसे, लैलेमज़नूंज्योंगुलिइतांसेसनेवने ॥नट
नागरप्रीतिकोजितावेयाहिलावजीह,प्रीतिकरिवेकी
रीतिजानतइतेजने ॥ ९६ ॥

सवैया—नटनागरनेहलग्योहैनयो,हमकाजउन्है
तरसावनोनाँ ॥ फिरयाव्रजवीचचवावचलै,तुछका
रजकोतनतावनोनाँ॥ तुमकोसुखदेखिहमेंसुखहै,गु

णनूतननेहकेगावनोनाँ ॥ इतआवनेतेदुखपावनोहै,
इतआवनोनाँदुखपावनोनाँ ॥ ९७ ॥

कवित्त—पहिलेलगोहैलागआगसीनजानिपरी,
भाग्यकीहैबातविनचाहनपगनकी ॥ मैंतोनटना
गरउजागरनकीन्हीऔसी, परीशीशआययहैदागन
दगनकी ॥गुरुजनकीमानीनाहिंछानीहीछिपाय रा
खूँ,हाहामैंनजानीऐसीमोशिरखगनकी ॥ मगनभ
योहैमनठगनालिखीनहाय, अगनअनोखीपेखीचित
केलगनकी ॥ ९८ ॥

सवैया—कैसेकहूंनटनागरजू,अबयाश्रमहायजरों
किनजीकी ॥मोउरबीचदरारादिखात,सोयाकोसिये
कासुईदरजीकी ॥ कहाजानेधनाढ्यकँगालनकीग
ति,हैगरजीसोलहैगरजीकी ॥ बेमरजीकीव्यथासिर
जानहिं,जानतहैंगरजीगरजीकी ॥९९॥आलमशेख
सुजानघनानँदजोजगबीचयाजालअरूझो॥रंकरुरा
वकोभावनहींयह,रंगरँगोजिन्हैऔरनसूझो॥वाअल

वेलीसीलैलीनिहारिकै,पूतपठानकोजाहरजूझो ॥ जानअजानभएनटनागर,प्रेमकोनेमप्रवीणसेबूझो॥ ॥ १००॥जितनेमुखबैनकेढंरसचूवत,तेसबहीचुनि वोईकरै ॥ धरिध्यानहियेनटनागरसो,गुणतेरेललागुणिवोईकरै॥ निशद्योसजहाँतहाँशीशसदाधरै,धीरजनाधरिवोईकरै ॥ फिरिज्वावनदेवोहमेंतोकहा कछुकैह्योकरोसुनिवोईकरै ॥१०१ ॥पहलेमेंकह्यो समुझायतुह्मैं,लडवावरव्है करैएकनमानी ॥ ऐसेको देतवजायकेढोल,करैहैसबीपरराखतछानी ॥ और कहाकहियेनटनार,जानतनाटुकलाभरुहानी॥ हाय कहाअबरोवतहौ, अहोप्रीतिकरीकछुरीतिनजानी ॥ १०२ ॥ यहैप्रेमकीरीतिप्रतीतिसुनी, परपाकतसोफिरपाँकेनहीं ॥ कहियेकहाँजायपुकारकरों,गुरुलोगसभाविचआँकेनहीं ॥ मम भालमेंहाललिख्योविधियों,कोउयाव्रजवोलतसाँके नहीं॥ नटनागरहाअबऐसीकरी, दुसरायकेद्वारक

झाँकेनहीं ॥ १०३ ॥ मनकोमिलवोजवहीते भयो,भयोतीखेकटाक्षनकोघलिबो ॥ सुखसागरजानिसनेहकियो,नटनागरआगविनाजलिबो ॥ तनकोमिलिबोसुरह्योअतिदूर, रह्योकुलमारगकोचलिबो॥ रहोबैननकोमिलबोनबनै,नबनैअबनैननकोमिलिबो॥४॥नैननसेनचलीनमिली,तोउजाहरदेखपरीजबजागी ॥गोकुलवेदगुरूजनकी,कुलरीतप्रतीतभईसबदागी ॥ वानटनागरकीछबितोयसों,ज्योंछिर-कोतोरहैकहुँपागी॥ हायनऔरउपायकहूँ,अबमोंउरलायवियोगकीलागी ॥ ५ ॥ जितहीतिततेजवहीतबहीं,इतआयछिनेकतोछायोकरो ॥ नटनागरकागदकैसेलिखूँ,वहनागरिकेमनभायोकरो ॥ कुलकानरुलोगकीलाजनसायकै, प्रेमकीबेलिबढायोकरो ॥विरहागतियाकीकथाहमरेढिग, आयललासुनिजायोकरो॥६॥निजप्राणकीघातकोपापविचारिकै,नेकहुनाविषखायेबनै ॥ कुललोकरुवेदमर्यादकीकै

द,बड़ीगृहबीचरहायेबनै॥नटनागरलोगचवावनसों
धरफूँककैपाँयधरायेबनै॥दृगवाणअनीकोसुजानहि
ये,जिनकेलगीजासोंकहायेबनै ॥ ॥ ७

कवित्त–पहलेतोप्रीतिकेपयोधिमेंपगायदीन्ही,अब
जोचुरायेनैनहाययोंदहाकरो ॥तापैजोसुनावतहोरू
खेमुखएसीबात,सुखजोचहोतोनेकदुखहूसहाकरो॥
याव्रजबुराईदेतेदेरनकरैगीदेखो,नीतियोंसुनावोनेह
गैलकोगहाकरो॥हमकोनभाईनटनागरजगाईआप,
प्यारेजोकहावोततोन्यारेनारहाकरो॥ ८॥छैलमैंति
हारीछविछाकसोंछकीहूंहाय, छलसोंनजान्योंजूछ
लीसीरहिछानीमें।पेखेहूप्रतीतकरप्राणनकोकीन्हेपे
श,पूरेनामनोरथपरैहैजायपानीमें ॥ दूबरीभईहैदेह
रावरोदियोवियोग,नटनागरनागरनिहारकेविकानी
मैं॥सबकीकहानीजीकोनेकहूनमानीमित्र, मिलिबो
बनैगोनाहिजानीयानजानीमैं॥ ९॥कुलतेंकुटंबतेंक
दंबतेंरुकुंजनतैंःकूलयमुनातेंहानिहारबेरकीनोतें ॥

जगतैंरुजसतैंजगातैंजातपातहूतैं, जुलमीतैंजाहररही
मनछीनलीनोतैं॥भालमेंलिखीहिनटनागरभलीया
बुरी,हायदुखएकजोपैनेकहूनभीनोतैं ॥ बालरूपी
तालतैंनिकारमोहजालडार, सुखतौहिकालललालहा
लदुखदीनोतैं॥१०॥ एरेदिलदारतोसोंकहतपुकार
हार,कछुनाबिचारध्वनिकाँननमेंनायदे॥जारदेरेवि
रहाकेबंधनविकटफंद, वृक्षयोवियोगजाकोजरतेमि
टायदे॥मिलनटनागरतूअबतोउजागरह्वै, जैसोउर
बीचध्यानतैसोरागगायदे।कौननहमारेमेंकृशानुसी
बढीहैचाह,तेरेचंद्रआननतेताननसुनायदे११॥नट
नागरबाँचियोउजागरलिख्योहैपत्र, आजहूतैंनेहजा
निछेहनछियोकरो॥याब्रजकेबावरेबुरेहैंबिजमारेलो
ग, तिनतेछिपायजराखबरलियोकरो॥प्रीतरहीछाँ
नीजाकोअबलोनजानाकाहू,काननचवावनकेबाच
क्योंपियोकरो ॥परशभयेकोप्यारेवरषगयोहैबीत,
तरसविचारजरादरशदियोकरो॥ १२ ॥हमतोवहा

ईजातपातयेविख्यातबातबोलतप्रभातरातनाहींक छुछानेमें ॥ आवनहमारोमनभावननहोतउत,महा परमारथहैछबिसोंछकानेमें ॥नटनागरमानउपगार अतिजानजिय,नेकडरउतहैहमारेआनेजानेमें।बाण गहीनैननेहायनविचारीकछु, प्यारेकहाहानतेरेसू रतादिखानेमें॥१३॥ नटनागरपूछकेसुन्योहैबुद्धिसा गरते,कागदलिखेकोबाँचिकह्योजिनसोधते ॥ आज लोंनसुन्योदेख्योपोथीकेप्रबंधनमें, नाहिनपरेगोपार परेलिखओधते। निश्चैनिहारकैउचारतहोंऐसीबात हँसकैसुनावतकहूँनकछुक्रोधते॥ बोधतेअबोधतेया मोदतेविरोधहूते, परिकैकब्योनकोऊप्रेमकेपयोधते ॥१४॥कुलऔकुटंबकेदरारेभारेभानुकर,वेदगुरुज्ञा रखोदडारेसोनपाइयतु ॥ सुघरसुघारजामेंलग्नविच नायदिये,जैसेरसग्रंथनमेंआगेआगेगाइयतु।रावरेअ नुग्रहकोमेंहवरसायोआप, एकोबीजऊग्योनाहिंभा ग्ययोंदिखाइयतु ॥ हाहानटनागरउमेदफलफूलकी

थी,प्यारेप्रीतखेतमेंतोरेतनलखाइयतु १५ एरीमेरी बीरधरधीरसुनमेरीपीर, तीरजैसोलागतशरीरनीर कारेसों ॥ कारेकारेबादरयेन्यारेदुखदेनलागे,कटत करेजाकारीकोकिलपुकारेसों ॥ कारेनटनागरते न्यारेह्वैनिहारेदुख, प्यारेप्यारेप्राणकैसेरहतबिसारे सों ॥ नेकसुखलायबोकहूँनकितजायबोरी,हायमन सौंपदियोहाथनहमारेसों ॥ १६ ॥ भूँखप्यासहासरु विलासजेअवासनके, मित्तबिनचित्तमहँकैसेमनभा तहैं ॥ रूरेजगबीचकेउमानसबिरंचिरचे, मेरेकोउ आँखिनमेंनाहिंनसमातहैं ॥ नटनागरआगसीजरे हैउरआठोंयाम, घाँमलगैचाँदनीरुचंद्रविषदातहैं ॥ करतपरेखेहायप्राणअबशेषरहे, देखेबिनप्यारेकेअ लेखेदिनजातहैं ॥११७॥

वियोगशृंगारमान सवैया—औरतातोहिकोनिं दतहै,सखिक्रोधितबामनमानैमनाई।मैंनटनागरबंद तहूँ,धनरीधनतूवृषभानुकीजाई ॥ तेरेमनाइवेबीच

उनिंदित,सोचमेंक्योंपलकैंतोमिलाई ॥ कालकेला लनभूखेहुते,सुभलीकरीतैंनेहहातोखवाई ॥११८॥

कवित्त—पहलेतोलालनकेउरलिपटाइबेको,फि रीछविछाकीतैंनराखीसुधदेहकी ॥ सारेव्रजबारेये विचारेसमुझायहारे, गुर्जनासिखाईतूनसीखीकछुगे हकी ॥ नटनागरउमगउछाहसोंबुलाईआज,हायन टवैठीवातकीनीतैंअछेहकी॥बीतिगईरैनरसरीतिग योमोहनको,प्रेमकीप्रतीतिगईनीतिनिजनेहकी १९ जाकेकाजमैंनेलोकलाजकोअकाजकीनी,सखीकेस माजकुलकारनवचोनहीं ॥ फेरगुरुवृद्धपुनिसासरे रुपीहरमें, सारेवृजमाँहिंऐसोकोहैसोखिचोनहीं ॥ हहानटनागरमैंसागरसनेहआने, आगरनिकारेगुण हियकापचोनहीं ॥ कोटिकप्रपंचकीन्हेकाहूकोनदी जैदोप,रंचसुखभालमेविरंचहूरचोनहीं ॥ २० ॥ सागरसनेहगुणखाँननटनागरहैं, नागरीतैंतातेचित चोन्योक्योंहुलासको ॥ भोरहीतेभामिनीभुलाऊँ

तूनभूलैनेक, भाँवरीभरैहैवोविहारीरसरासको ॥ मानतजिमानमेरीवारीमेंनिहारनेक, प्रीतमबुलावे मगलीजियेअवासको ॥ रजनीरहीनआधीवजनी रहीहैवाकी, सजनीप्रकाशगयोरजनीप्रकाशको ॥ ॥ २१ ॥ गोधनगुविंदग्वालगोकुलगलीकेगैल, गावतहैंगोरीहोरीछैलगैलहासको ॥ गोपहूहथाय नतेगयेनिजगेहकाज, त्रियासुखसाजकेसँवारेनि जवासको ॥ कोकनदकोकशोकगोपनिगएविलो कि, हर्षनटनागरहैनिश्चयविलासको ॥ वोरीदुख तजनिजसजनीशृंगारसाज, सजनीप्रकाशभयोर जनीप्रकाशको ॥ १२२ ॥ गोकुलकीकुलकीगोपा लगोपीगोधनकीगारीकीनगारयोंगँवाईगैलगेहकी॥ दारुणदुसहदुखदीनताउठाईदेखो, दिलमेंबढ़ीहै दाहदाधीछबिदेहकी ॥ मारुतमयंकमृगमदहूमहा ननंद, लागतहैआगनैनहूतेऋतुमेहकी ॥ नटनागर निरखीनालिखीसदग्रंथनमें,नाज़ुक निपटहै निहारो रीतिनेहकी ॥ २३ ॥

वियोगशृंगारप्रवास-सवैया।

उद्धवकोपठये उतते,इतज्ञानसुनायकेंक्योंउर जारो ॥ चेरीचुभीचित्तमेंहितसों,अबप्रीतकीरीतक रीप्रतिपारो ॥ नागरताइतनीनटनागर,याव्रजकेहि ततो मतधारो॥ थीतोविकाऊनलेतबनी,अबपूछत क्योंतुममोलहभारो ॥ २४ ॥ वेदपुराणकुरान किताबन, औरहुग्रंथअनेकनसूझो ॥ जेजगमें सदवैद्यकहावत, जोनटनागरताहितेबूझो ॥ चातुरऔरगुणीजितने, कियप्रश्नसोईहियमाँझ अरूझो ॥ याकोउपायनपावतहैं, जगमित्रवि योगसोंरोगनदूजो॥ २५ ॥ काठकेबीचरहैघुनकीट ज्यों,हेमनरोगकहांतकराखैं ॥प्राणसथांनरहेनहिंरा खेहु,दारुणशोककहाँतकराखैं।एविषियासुखदादुख दाभई,हायकुभोगकहाँतकराखैं ॥नेमलख्योनटना गरनेक,वियोगकोयोगकहाँतकराखैं॥ २६ ॥ येअँ खियांदुखियाहैंसदा, कबह्वैसुखियाछबिमित्रकीज्वै

हैं ॥ जानतहौंमैं असाढकेअंबुद,ज्योंउमडेहैंअघा
येकेच्वैहैं ॥ मोउरभोहैअगारयोआगको, देखेबिना
नटनागरख्वैहैं॥ प्यारेपरीहैवियोगकीराति,सुयाको
प्रभातकहोकबह्वैहैं ॥ १२७ ॥

कवित्त--मोहनमिलायवेकोउद्यमउठायोवीर,मं
दभाग्यमेरेतफुऱ्योनश्रमजानदे ॥ श्रवणसुनेतअ
नुरागउठोमेरेउर,सोऊदुखधाऱ्योमैंकहूंसोनेककान
दे॥प्यारेनटनागरकोध्यानतूबतायमोको, विनयवि
चारमेरीशीघ्रप्राणदानदे॥ मिलबोरुबोलबोनिहार
बोरह्योहैदूर,हहाउनपायनकीधूरनेकआनदे॥२८॥

सवैया--काननसोंनितबैनसनैं, अरुनैननरूप
निहारतहैं ॥ फिरआननसोंअतिसुंदरनामलै,
आपसबीचपुकारतहैं ॥ अहोउद्धवकाहेप्रलापउ
चारत,श्यामवहाँकोउधारतहैं ॥ नटनागरप्यारो
हमाराहमैं,पलएकहुनाहिंविसारतहैं ॥ २९ ॥

कवित्त—बालमविदेशजानिबागनकेवृक्षनपै,बैर हीबढावतहैचातकबहूबहू ॥ रैनकोकरैहैरारिनीं दनिरवारिएते,राकापतिरागरंगसुरभीरहूरहू॥प्यारे नटनागरकेअंतरसमैंकोपाय, मोहिंकोसतावतहै विरहामहूमहू ॥ लाजकीनसायनबसायनकछूनता ते,कोकिलाकसायनपुकारतकहूकहू ॥३०॥ तक ततवीबजिताततहीकितावनको, नटनागरताके तर्कएकहूलखातनां ॥ नइतरउपायनाहिंनिश्चैसोइ लाजकोऊ,याकोजियजीवनतोजाहरजनातनां॥ अ श्वनीकुमारआदिधन्वंतरिवैद्यजैसे, कहांलुकमाँ नतुच्छकोऊयशपातनां ॥ शरदभयोहैदिलज रदभयोहैरंगगरदभयोहै, अंगदरदादिखातनां ॥ ॥ ३१ ॥ शंभूकोपिनाकऔत्रिशूलजगदंबा जूको,वासवकोवज्रवडवागहूअनूपनाँ ॥ नटनागर चक्ररुषडाननकोशूलमहा,शेषफुफकारमारतंडता पओपनाँ ॥ भीमरुकिरीटीजूकेगाण्डिवगदागरिष्ट,

मुसलहलायुधकोआवतहैजूपनाँ ॥ गरुडझपेटपु
निमारुतीचपेटमहा, मित्रकोवियोगजैसोकालहूको
कोपनाँ ॥ ३२ ॥ विरहदुवारजाकेऔरनअधारक
छु,तीनोपुरधारनटनागरनधामहै ॥ जरतजनातना
हिंजनकोलखातनाहिं,विपत अमोघ ओघ शोक
आठों याम है ॥ रहत समाधि जाको अधिकै विषा
दहूते, विरह व्यथाके थाके जाके नहिं काम है ॥
आह नहिं होती तोकराह मर जाते केऊ, दार्दिन
के उर माँझ आह विसराम है ॥ ३३ ॥ एरे हो
चितेरे तोसों चित्रनाँ बनेगोभाई, नाहिन समक्ष
प्यारो बातहै दिगंतकी ॥ नटनागर चित्रकीन
तेरे पास साहित्य है, सोई सुन नीके मैं सुनाऊँ
बात तंतकी ॥ विरह चितेरा विश्वकर्माको
स्वरूपहोय, नवहीं अवस्था रंगभीत मेरे
चितकी ॥ ऐसोयोगसाधिकैसमाधिबिचभयोथिर,
जापैलिखिगईहैछाबिवामेरोमितकी ॥३४॥उद्धवजी

लिखाइलायेज्ञानवैरागयोग, रोगसोंदिखातहमैंना
हिंकछुआसहै॥नेमजोकियोहैनटनागरउपासनाको
व्रतनटरैगोदेखोजौलोंघटश्वासहै॥ कान्हरकहावेको
नवाकोहमजानैंनाँहिं, कान्हरहमारोऐसोलिखैबडी
हासहै ॥ कान्हरतिहारेतेहमारेकछुकामनाँहिं,का
न्हरहमारोतोहमारेप्राणपासहै ॥ ३५ ॥ तुमजोब
तावतहोनंदकेदुलारेवहां,येहूबातझूंठजिनकहोव्रज
सारेमें॥वेहुकोउऔरह्वैहैंनाहिंनपरेखोकछु, दूषणल
गावत हौ हायप्राण प्यारेमें ॥नटनागर करत हमारे
संग नृत्य नित्य, बाँसुरी बजावत है यमुनाँ किनारे
में ॥ मोहन तुह्मारो तो तुह्मारे मथुरा के बीच,
मोहन हमारो तो हमारे नैन तारे में ॥ ३६ ॥
एहो द्विज पाँय पर पूछतहों तोसों प्रश्न, मेरे
भाग्य लिखी बातैं जाहर दिखायदे॥गणित निकार
नेक करिये विचार हाहा, मित्रको संयोग सुधा
कानन सुनायदे ॥ मेरे धाम बीच जैतो धनसों

धरूँगी आगे, केती अवधी है दुख दारुणकी गायदे ॥ कारो नँदवारो नटनागर भयोहै न्यारो, प्यारो मिलवेकी मोंको सुघरी बतायदे ॥ ३७ ॥
कोकिल कलापी कीर चातक कपोत आदि, कूकें सुनिहूकेंजाकीकाहेको सह्योकरूँ॥शीतलसुगंधमंद मंद गति मारुतसों, चंद्र अरु चंदनसों चित्तक्यों दह्यो करूँ ॥ शिक्षाजो सुनावे जाकी सुनै अरु गुनै कौन, गुण नटनागरके गिनकै गह्यो करूँ ॥ सुखदुखदोउमोंमैहोयकेविलोमबसे, मित्रजोमिलेतो मैंनिचिंतह्वैरह्योकरूँ॥३८स्वस्तिश्रीसज्जनपुरमहा शुभश्रेष्ठस्थान, उपमाअनेकजेतीप्यारेकोलिखूँमैं धाप॥यहाँकछुकुशलतिहारेतीनदर्शनते, चाहतति हारीमित्रअहोनिशिजपोंजाप ॥नटनागरपूरणप्रसन्न तामिलोगेजब,महादुखएकजाकोमोउरबढोहैताप॥ हायदिनरातीमेरीछातीयोंजरीहीजातीकातीविरहा कीनेकपातीनाँपठाईआप ॥३९॥राकापतिरागरंग

रहशअलीनसंग,मोंमनउमंगतजिपवैशपरतजात॥ चोलनविहारवनबागनतडागनकेवारनकेभारधरपायनधरतजात॥ विरहपयोधजाकोबोधनकहाँलौवारि,मोदिलथकोहैजामेंबूडततिरतजात ॥ प्यारेनटनागरपयानपरदेशकीनों,तादिनतेनैनभरभरकेढरतजात ॥ ४० ॥ हायमनमेरोमेरेवशकोनरह्योआली,करनासिखाऊतोहूअकरकरतजात ॥ चंद्रअरुचंदनकोशीतलवतावतपै परशदरशहूतेमोउरज़रतजात॥ शीतलसुगधमंदमंदगतिमारुतयो,मीचको सिखायो पंच प्राणको हरत जात ॥ प्यारे नटनागर पयान परदेश कीनों, तादिनते नैनभर भरके ढरतजात ॥ ४१ ॥ नेहके सुनीर में शरीर मेरो आदि अंत, धीर न धरत हाय देखत गरत जात ॥ विरहदवारपैपतंगमेरेपाँचौंप्राण,अनुक्रम होतएकएकहीपरतजात ॥ लोयनकोमृगमीनकंजखंजदाखतहै, झूंठसबभाख्यौएतोझरनाँझरतजा

त ॥ प्यारे नटनागर पयान परदेश कीनों, ता
दिनतेंनैनभर भरके ढरतजात ॥ ४२ ॥ बान
तजि बावरी बयान सुन बैठ ढिग, हान हैनया
मेंनेकक्यों हैतूगुमानमें ॥ योंहै महानठानतुवना
कछु गिनीहान, मानभय पंचबाण जानिहैं
निदानमें ॥ नटनागरमानअपमानकोनहान
हैजू, मैंहूंहयरानहूँगिलानतेरीआनमें ॥ गन्योंहैअ
यानजेवोनाहिनसयानहेरे, प्राणनपयानकीनोंप्यारे
केप्रयानमें ॥ ४३ ॥ वामचषआजमेरेकांनसों
कहैहैबात, त्योंहीभौंहवक्रभृकुटीनसुखदैनीसों ॥
वामकुचबांहत्योंहीकरत उछाहआज, होतहैरोमां
चमेरीदेखोकटिपैनीसों ॥ प्यारेनटनागरपधारेंगे
प्रदेशहूते,जौहरकैरेंगे युद्धपायरबजैनीसों ॥ सगुण
सुहावनेसेहोतहैंसहेली देखो, पीठपैहियाकोहा
रबिहरैहैवेनीसों ॥ ॥ ४४ ॥ श्रद्धाइननैन
नमेंनाहिंनानिहारवेकी, त्योंहीश्रोत्रबीचआयमहाशू

न्यलायोहै ॥ नासिकारुरसनामेंभ्रमसोंपरयोहैभा
री,हाथपाँयडोलनमेंनाहींबलपायोहै॥ नटनागरदू
रबसिवेतेबसेएतेदूर, खानपानन्हाननींदआदिलेगि
नायोहै ॥ काहूनेनगायोहैबतायोहैनवेदकाहू,रावरे
वियोगकोमहानरोगछायोहै ॥ १४५ ॥ आलयमें
अपनेलखेहैंलालसपनेमें,बालहैविहालअतिचित्तमें
सकानीसी ॥ त्योंहींसुनसुयशसराहनासहेलिनसों,
स्वाँसैंभरिशीशकेकढेहैंप्रीतसानीसी ॥ नटनागर
धारेपतिमनक्रमवाचहूते, जाहरजनायजुपैबाहरबि
कानीसी ॥ शोकरससानीबिलपानीसीबिधीसीबोलै,
छीनीसीछकीसीहँसैडोलतदिवानीसी ॥ १४६ ॥
भारेदुखसारेयेबिलावेंगेपलेकमांझ, प्यारीकहिमो
कोप्यारकरकेपुकारैंगे ॥ न्यारेनारहेंगे वेनिहारेंगे
हमारेनैन, विपतावीयोगसारहिँसीहँसजारेंगे ॥
सगुनहमारेमन देतनटनागरके, आवनकीधावन
सुनाय हांकपारेंगे ॥ प्रीतम पियारेवेहमारे

ाणपाहरूहैं, प्रीतरीतजानपरदेशतेपधारेंगे ॥ ।१४७॥ बुद्धितेउठावतहैंउद्यमअनेकभाँति,ग्रीष मकेओराज्योंनिहारोनासपायजात ॥जाहिपैनमान रहैकरतउपायकेहू, शीतकेतुषारमेंज्योंअंबुजसमा यजात॥ नटनागरकहाँजायहायमैंसुनाऊँदुःख,ला ग्योआधीरोगयोकरेजामेरोखायजात॥ मनकेमनो रथसोंमनहीमेंवृद्धिपाय, मनहीमेंफूलैंफलैंमनमेंवि लायजात ॥ १४८॥ नीरदेमनोरथकोप्रेमबलिया रीएक, जाकीगतिऐसीदेखोछिनमेंभईहैहाय॥मों कोहुतीलालसानिहारवेकीफूलफल,भईनिरमूलजा कोकैसेदुखकहूंगाय ॥ जाहीपरउद्धवजूआयकै अन्याय बोलैं, कौनपै सुनाऊँसमझाऊँ कितकाहू जाय ॥ नटनागर नेकहू निहारते तो जानतेजू, रावरो कुपथ मृग जरहू ते गयो खाय॥ १४९॥ छंद घनाक्षरी ॥ जन्म शिशुताई रूकिशोरताई पाई यहाँ, गिनेंका अनेक कीनों ब्रजमें जितीफ

जीत ॥ वंसीवट यमुनाके नाहिन बखाने फैल, लोक कुल बेद कानि गोपिनकी गई बीत॥ ऊधो नट नागरजू पाती दे पठायेआप, जाहिपै लिख्यो है योग जानी नाहिं गई नीत ॥ कलहही पधारे जाको कालहू न बीते कछु, मोहन हमारे आज गावत तुह्मारे गीत ॥ १९० ॥ बार बार हार हार कहत पुकार तोसों, वृथा मत मारनेकधार धीर हारेतू ॥ सौंह नटनागरकी बोलत उजागरमैं, नागर कहावे नाँहि ऐसी वित धारेतू॥मैंतो दुखिया हौंआठोयामबीतेध्यावतही, ताहिकेअराधेसाधेनेक दयालारेतू ॥ भईममभाग्यकीसहाईतेरीसहीहाय, गईकरजारेदेखदिसादईमारेतू ॥ ९१ ॥

वसंत सवैया--अंबकेमंजुलमोरकढे, चलवागत डागपैकीजेसमागम ॥पीपरदेशनजाइबोउचित,जा इहैंतोउरमेंदुखदागम॥ जी न करोनटनागरचंचल, मानियेश्यामकबूकतोखागम ॥ गायोहैरागगुणीर

सछायोहै,आयोहैकंतवसंतकोआगम ॥ १८२ ॥ कैहैंकहासुतबीरबटोहुन, गैहैंततोउनहैं समुझैहैं ॥ सुधलैहैंकबैनटनागरसों,कहोपैहैंमहादुखकोसिखदैहैं। व्हैहै महा मदनज्वर जीयतो, ओसकी बूंदलों पोज बिलैहैं॥ ऐहैं वसंत बजैहैं बयारन, ऐहैं पिया यमके गण ऐहैं ॥ १८३ ॥ इतकी सुधि देहैं गुलाब प्रसूनते, अंबहु मोर दिखावहिंगे॥अरु कोकिलकीरकपोतकलापि,महामधुरस्वरगावहिंगे ॥ नटनागरबागनआगसोलागिहै, धावनभोरहुधावहिंगे॥इतनेहैंवकीलहमारसखी,कावसंतपैकंतनआवहिंगे ॥ ८४ ॥ एहोबटोहीव्यथाकीकथाकोसुनायकहोनटनागरजाँहीं ॥ आइवसंतदहंतहैदेहको,द्योसनिशाकछुहीननहिभाँहीं ॥ हाअबबीरइतीबिनती, समुझायसुनायकहोउनपाँहीं ॥ पाँचहुप्राणप्रवास बसे,उडिहैज्योंकपूरवघूरकीनाँहीं ॥ १८५॥

वर्षाऋतु० कवित्त—औघटअनोखेघाटसूझत

कितौनबाट,नाटितमयूरगणजोबनउपट्टेमें॥गाजघ
नघोरशोरघोरपिकचात्रकन,जिगनूँउदोतहोतकुंज
केचुहट्टेमें ॥ राधेनटनागरजूखडेथेकलिंदीकूल,
भीजतदुकूलखुलेपौनकेउपट्टेमें ॥ चपलाचमक
देखचपलचमकचली,दौरदौरदूरहीतेदुरतदुपट्टेमें॥
॥ ८६ ॥ बहरनघोरजामेंदहरनशोरभारी,
नहरनखारतारलहैंगतिपूरकी ॥ झिंगुरनशो
रहूपपैयनकीरोरपर, जोरबंधकोयलकोछिपीगति
शूरकी ॥ ऐसेमांहिंकुंजपुंजगुंजतमधुपगण, आ
गरचलोननटनागरहजूरकी ॥ दहकखद्योतमहक
तधुरवाईपौन, लहकलतांनतापैकुहकमयूरकी ॥
॥ ८७ ॥ प्यारदिनचारकरबदलाबिहारकीनो, आ
ईऋतुवरपाकीमानोमीचचेरीसी ॥ कारेअतिभारे
न्यारेबादराविकटदौरे, बीचबीचविद्युतलताहैकाल
प्रेरीसी ॥ नैननटनागरनिहारेविनरोयरोय, आँसु
नउमंडकरीओलनकीढेरीसी ॥ नेहकीउजेरीसोतो

निकटनपाईहाय, आँखिनहमारीआगेआवतअँधेरीसी ॥ १५८ ॥

सवैया—नटनागरराधिकाकुंजमेंआज, लखीवरषाऋतुसादररी ॥ मुरलीअरुझाँझरबाजतहैं,पिकचातकबोलतदादुररी ॥ जलस्वेदरोमांचपैआयकैयों,बहिकैसबहीभरेखादररी ॥दुतिदामनीसीमहारानीदुरै,तनसाँवरोसाँवरोबादररी ॥ १५९ ॥

कवित्त— गावनलगेहैंअतिपावनमलारगुनी, आवनहूमित्रकोहमारेकाँननायदे ॥ झिल्लीकेकीचातिकऔदादुरकेबोलनमें, विषसाभरचोहैतामेंअमृतबसायदे ॥ काँननमेंप्यारेनटनागरपधारवेकी अवधसुनायअर्धमृतकजिवायदे ॥ सावनकोआवनसुनायोपिकरावननें, आवनजीभावनकोधावनसुनायदे ॥ १६० ॥

सवैया—चहुँओरतेचित्राविचित्रचमू, बदरानिजरूपदिखावहिंगे ॥ पिकचातिकझिंगुरदादुरमोर,म

हाउनमादबतावहिंगे ॥ नटनागरवृक्षलतालिपटी, लखिकै सुधिकानहिंलावहिंगे ॥ सखिचातुरमासमें आतुरह्वैकर, चातुरकानहिंआवहिंगे ॥ १६१ ॥

कवित्त–लालअरुपीतश्वेतश्यामउठेचारोंओर घोरअतिभारीजोरभरेआतजातहैं ॥ धूजतहैध रणीविहारलखिबादरकैं, प्यारेनटनागरवियोगतेन भातहै ॥ एरीमेरीबीरधरधीरतूनिहारनीके, मेघ मतमानतेरीनाहप्राणघातहै ॥दाशरथीरामरणरोखे दशमाथशीश,जाकीवाहनकिरीछबानरादिखातहै॥ ॥ १६२ ॥ ठौरठौरमोरमुखमोरये कैरहैंशोर, चोर चितचातकचवायमनचावेक्यों ॥ जाहीपरदादुरये-दाहतहैमेरोदिल, झिल्लीपिकझारझारझीनोझीनो-गावेक्यों ॥ हारहारहाहाखायकहौंशिरनायनाय, विहंनटनागरकोकोउविदभावेक्यों ॥ दौरदौरआवे-इतकारीघटाजोरजोर, घोरघोरहायवरसानेबरसा वेक्यों ॥ १६३ ॥

दोहा—प्रेमपत्रगोपीनप्रति, ज्ञानयुक्तकहिगाथ॥
कहतकृष्णप्रतिपुनिकथा,सुनिहरिहोतसनाथ६३॥

अथ उद्धवको बोलबो श्रीकृष्णप्रति (पद)

ऊधोविसरि गए सब बातैं ॥ वे नँदनंदन दूर बसतका मथुरा निकट यहाँतैं ॥ कबहुँकतोयाहू-दिशिआतेमातपिताकेनातैं ॥ छुटन न पावत राजकाजते काविधिआवैंयातैं ॥ अबजानीइत-लाजलगतहै ब्रजविचवदनादिखातैं ॥ औरसवैतु-मसोंपूछैंगे निशाकछूयकबातैं ॥ नटनागरकेहाल-सुनादो कुबरीयुतकुशलातैं ॥ २६४ ॥ सारेब्रज-सोंमैंवैर बसायो ॥ नाथमैंपातीदेपछितायो ॥ का-जानैंतुमकहालिख्योथोजाकोफलमैंपायो ॥ जित-तितजायकतहुँनहिंआदर महाअयशशिरछायो ॥ माधोमैंपंडितपनतजिकै उनकोगायोगायो ॥ सी-

खसुनायकहीसबहमसोंकाहूमननपत्यायो ॥ उम-
डीप्रीतघटादशदिशितेवरषप्रवाहबढायो ॥ भरि-
भरिढरतढरतफिरिभरिभरिउमँगिउमँगिझरलायो।
ज्ञानभक्तिवैरागविचारोएकपलमाँझबहायो ॥ व्हाँ-
नचलैब्रह्मादिकहूकीकरैआपनोभायो ॥ कोउनसु-
नैंकहैंकछुहूनाचलेकहासमुझायो ॥ पूछैकवनक-
हैको उनतेनाहकफँस्योखिचायो ॥ आपसबीच-
करैमिलिबतियाँरोरा रोर मचायो ॥ कुबिजाक्रूर-
कंसकीदासीवासोंमनउरझायो ॥ यहाँकौनरोकत-
थोउनकोवहाँजायकियछायो ॥ वेअक्रूरक्रूरमतिउ-
नकैउद्धवसाहितागिनायो ॥ हाहाखायपाँयसबकेपर
मुशकिलछोरछुरायो ॥ प्रेमपयोधिमग्नसबवेतोवृ-
थामोंहिंपठवायो ॥ वे उनमत्तमत्तप्रेमैमेंकउनि-
ओरमतभायो ॥ नटनागरकछुकहतबनैनाउनको-
कोलनिंभायो ॥ १६६ ॥

दोहा--कियेप्रश्नउद्धवतेपुनि, कृष्णअतृप्तकृपा ल ॥ यहकौतुकममसुननहित, काबोलींव्रज बाल ॥ १६७ ॥

अथ प्रेमपत्रिका पचीसी।

सवैया—बसीठिहुरावरीफोटिपरी, यहयोगकी चीठिजरीसोजरी ॥ व्रजबासीतोप्रीतिउपासीभए, इनकीजगहाँसकरीसोकरी ॥ अहोऊधोजूसूधोसो मारगछाँडिकै, भाँडक्योंहोहिंअरीसोअरी ॥ नट-नागरतोनिरबंधभए, हमप्रेमकेफंद परीसो परी ॥ ॥ १६८ ॥ समुझावतकौंनकहासमुझैं,हमतोयह बानबरीसोबरी ॥ दुखियासुखलाभनहानिकहा, विधिरेखलिलारधरीसोधरी ॥ अहोउद्धवजापैयो योगलिख्यो,यहैयोगनहींहैअयोगकरी ॥ नटनाग-र० ॥ १६९ ॥ नहिंग्रामसोंधामसोंकामकछू, ह-मनेहकेनग्रढरीसोढरी ॥ कुलकानरुलोककीला-

जसोंआज, उजागरहोयटरीसोटरी ॥ अहोउद्धव जू कितनीककहैं, हमतोयहप्रीतिभरीसोभरी ॥ नटनागरतोनिरबंधभएहमप्रेमकेफंदपरीसोपरी ॥ ॥ १७० ॥ यहप्रीतिकीरीतिप्रतीतिसुनी, कछुनीतिअनीतिखरीसोखरी ॥ तुमजानतनाहिंअजान भए, कछुभाग्यकीरीतिफरीसोफरी ॥ अहोउद्धव-जूनिशिद्योसयहाँ,कोउबूडीसोबूडीतरीसोतरी ॥ नटना०॥१७१॥ उतजायउजागरवेतोभए, हमने-हकेनेमछरीसोछरी ॥वहजीवनमूलतोयोगलिख्यो, हमप्रीतिकेरोगमरीसो मरी ॥हमकोवैरागवहाँअनु-राग,नाहिं शोचकछूहैहरीसो हरी॥नटना०॥१७२॥ एकआएथेक्रूरअक्रूरयहाँ, उनसोंभरपेटलरीसोलरी वहवेदपुराणकीरीतिकहै,इतनैंनसोंनीरझरीसोझरी हमहारेनटेकटरैकवहूं, यहप्रीतिपयोधिगरीसो गरी ॥नटना० ॥ १७३ ॥ रसग्रंथिकीरीतिकुरीतिभई, विपरीतिकेपंथचरीसोचरी ॥ उतकूबरीनीतिनिधा

नभई, इतऔरहिघाटघरीसोघरी ॥ जहाँउद्धवसे-
अक्रूरमुसाहिब,तौसाहिबिरीतिसरीसो सरी ॥ नट-
ना० ॥ १७४ ॥ कहोकौंनसेवेदपुराणकेवाक्य,
अवाक्यसोंप्रीतिफरीसो फरी॥ यहैपातीनछातीपै-
कातीधरी, हमरीसुनिबुद्धिगरीसो गरी ॥ ब्रजवास-
तेऊधोप्रवासकरो, अबखूबसीछातीदरीसो दरी ॥
नटना० ॥ १७५ ॥ मतिगोकुलकीकुलकीतजिकै,
भजिकैउरचेरीभरीसो भरी ॥ हमतोबिगरीसगरी-
बृजग्वालिनि, होंहिसुरी न नरीसो नरी॥अबयाहि-
कोशोचसँकोचनहीं, सबप्रीतकेपंथडरीसोडरी ॥
नटना० ॥ १७६ ॥ कहोकौनसेनेमकहोकुलकौन-
सों, कौनसीजातिधरीसोधरी ॥ कहोकौनसोसासु-
रोपीहरकौन है, प्रीतकेरंगगरीसोगरी ॥ हमउद्ध-
वकाजसबैसोतजे, वहैवाविधिदेखोकरीसोकरी ॥
नटनागर० ॥ १७७ ॥ वहप्रीतियशोमतिकी-
परित्याग, सखानपैहानिकरीसोकरी ॥ अरुनंद-

केभाग्यकिएअतिमंद, सोवृद्धकीसुद्धिभलीविस-
री ॥ कितनेगुणऔगुणकैसेकहैं, कहतेयहजीभ-
अरीसोअरी ॥ नटनागर० ॥ १७८ ॥ जबदा-
नीह्वैमाँगतथेदधिदान, नदेतथेजापैखरीसोखरी ॥
वहमीठोसोगायबजायकैबाँसुरी, नाचनचायकैदा-
सीकरी ॥ फिरहाहाखवायनिभायकैनेम, अनेम
ह्वैलागमरीसोमरी ॥ नटना० ॥ १७९ ॥
फिरिफागमेंवाअनुरागरँगे, रुसुहागगुलालडरीसो
डरी ॥ अतिप्रीतिअबीरसुबीरसमेत, उडावतधुंध
अरीसोअरी ॥ जिहिंसों अब लाजत राजतह्वां,
यहाँयोगकेसाजजरीसोजरी ॥ नटनागर०॥१८०॥
जबकुंजकछारकलिंदिकेकूलपै, फूलकेफागमेंगोद
भरी ॥ फिरिरागसुनेंअनुरागरँगीह्वै, सुहागाकिकीच
अनेकझरी ॥ सुखसारेगिनेंएकचोरिकेसाथ, यागा-
थतेदेंहजरीसोजरी ॥ नटनागरतो० ॥१८१॥ वँहैं
दासखवासमेंपासरहैं, उपहासकीवातनजीयधरी ॥

बिनयोगलिखेहमसाधतयोग, यारोगसों देहगरीसो गरी ॥ अबउद्धवहारेहाहातुमसों, रहियेचुपचापक रीसोकरी ॥ नटना० ॥ १८२ ॥ वहैंबाँसुरीकीसुन आँसुरीकाँनन, काँननधीरकबौंनधरी ॥ नघरी कहुँचैनपरैघरमें, मनमेंनावियोगअधीरकरी ॥ वहैं बानविहायबिकायगये, हमैंहाययेहीकैभुलायमरी॥ नटना० ॥ १८३ ॥ वृजरानीतोआजबिरानीभई, पटरानीसुहाँनीसीकुब्जकरी ॥ वहैंचेरीरचीचित- कीलखिचातुरि,आतुरसोंकरप्रीतनरी ॥ अबवाहि सोंनेहानिबाहियोजू, वहैं आपकेभाग्यहुतेउबरी ॥ नटना० ॥ १८४ ॥ वहैं क्रूरकलंकिनीकंसकी दासी, उपासीव्हैवाकेसहैदुखरी ॥ नहिंचैनपरैपल देखेबिना, हरियायलज्योपकरीलकरी ॥ अहोउ- द्धवनेम न प्रेमकोजानत, देहौंसुनायपुकारकरी ॥ नटना० ॥ १८५ ॥ कबप्रेमकोपंथपिछानतेतो नहिंठानतेयावृजसोंजकरी ॥ कुलटानकेफंदेफंदेहौ

फवे, हमैंचैनभयोसुनकैसगरी॥इतउद्धवकोपठवाय
हुजू, हुलसैहियबातसुनेतुमरी ॥ नटना०॥१८६॥
हमप्रीतिकीरीतिप्रभासुनिकै, गणिकागजगीधअरू
शवरी ॥ कपिकीटकिरातविख्यातहैबात, सुया,
हितेनेकनजीयडरी ॥ फिरिध्रूप्रहलादविभीषणसे-
मनधारिकैनाथयोंभीरकरी ॥ नटना० ॥ १८७ ॥
हमसूधीकोटेढीगनीगणिका, वात्रिवंककोअंकधरी
सोधरी ॥ फिरवाहिकोआयशुपायअहो, निशि
राजकेकाजसुधारतरी ॥ जिनकेहितहायबसीठ
भए, तुम्हैंलाजनआजभईजबरी॥नटना०॥१८८॥
नवनीतकेचोरनिहालभए, निधिकूबरीपायउजाग-
ररी ॥ यहैभालकीबातविचारियेजू, विचकूपपरेगु-
णसागररी ॥ फिरलाजनआजलौंताकोकछू, भये-
नंदकेवंशउजागररी ॥ नटनागर० ॥ १८९ ॥ पशु
वाँनमेप्रेमकोनेमसुनों, जलहीननजीयतहैसफरी ॥
मृगमोरचकोरअहीभ्रमरे, फिरचातककंजअरूम

करी ॥ चकचंद्रलखेअतिहोतहैमंद, कुमोदकेवृंद-
महासुखरी ॥ नटना० ॥ १९० ॥ ब्रजवासतेआ-
जउदासभए, यहाँदासरुदासीनथीसगरी ॥ रहिवा-
कीखवासीमेंहाँसीकरी, यहलागतहैहमकोविषरी॥
अबउद्धवयोंसमुझायसुनाय, कहोवृजबालतोयों-
झगरी ॥ नटना० ॥१९१॥वृजवासीमहादुखरासी-
भये, तुमदासीविलासीकीछापधरी ॥ यहैहाँसीहै
फाँसीकेथाँनहमैं, तुमदोनुहींएकसमानकरी॥वृज-
धीशकहायकैकूबरीईश, कहावतलागतरीसजरी ॥
नटनागरतोनिरबंधभएहमप्रेमकेफंदपरीसोपरी ॥

दोहा—संवतअष्टादशशतक, गएसतावनओर॥
श्रावणशुक्लत्रयोदशी, भईपचीसीभोर ॥ १९२ ॥

सवैया—उद्धवजूमनजोउमग्यो, उततोइतहूउर-
बीचउछाहथो ॥ चेरीरुचीउनकोलखिचातुरी, चो-
पकहाचितकोउतचाहथो ॥ प्रीतिकीरीतिकरीन-
करी, नटनागरसोंकहोकैसोनिवाहथो ॥ जोहमसों

हितहानिकियो, तौभूलिवोवाहरिकौनसोंसाहथो ॥
॥ १३ ॥ छाँडतनापलएकअकेलि, नपौढतहौपर-
यंकपैदंपत ॥ आपकेपाँवपैलोटतहैवह, वाकेपदा-
नललातुमचंपत ॥ उद्धवयोंकहियोसमुझायकै,
वाहिकोनामअहोनिंशिजंपत ॥ कूबरीकोनटनाग-
रजू, करिराखीभलीतुमसूमकीसंपत ॥ १४ ॥
पूरवरीतभईसुभई, फिरजूटछुटायगईनहिंमानी ॥
येव्रजलोगउचारतयों, नँदलालविकेअरुयेहूविका-
नी ॥ प्रीतितुह्मेंहमैंतूटगएकी, प्रतीतभईसबकोय-
हजानी ॥ जादिनतेनटनागरजू, करिरूपाशिरोम-
णिकूबरीरानी ॥ १५ ॥ हमजानतहैंलरिकापनते,
जिनकेछलछंदअरूरसरीती ॥ योगकीपातीलि-
खीनटनागर, जानचुकीपहिचानहुबीती ॥ एकउ-
द्धवऔरसुनीकहैंथा, अबपागेहैंश्यामवहाँकोउती-
ती॥पीय नये वो नईहैंप्रिया,वेनयेनयेपंथनईनईप्री-
ती॥१६॥सुनोवेयदुवंशीहैंराजकुमार, हमैंकछुना-

पहचानहैंजूतुमपातीलिखायकैलायेइहाँ,ठगहौकि
धौंसाहनकामहैंजू ॥ उलटेफिरजाइएह्वैहैअबेर,कि
धौंयहरावरीबानहैंजू ॥ उतवेनटनागरनंदकेनंदन,
उद्धवप्राणसमानहैंजू॥९७ अहोउद्धवचेरीसुनीहैंन-
ई, नटनागरकोसुखदायनहै ॥ वहक्रूरकलंकिनीरा-
नीकरी, ब्रजवासिनकोदुखदायनहै ॥ अनुरागउ-
तैवैरागहमैं, सोफिरज्ञानइहैं मनभावनहै ॥ वहकूव-
रीकोसबन्यायनबोलत, न्यायननाहिंकसायनहै ॥
॥९८॥जादिनसोंवह नारिमिली, तबतेनितजीयब-
धायनबाँटैं ॥ वेनटनागरहैंभँवरे, अबक्योंडेरिहैंक-
होकेतकीकाँटैं ॥ योंब्रजबालाकरैंबतियाँ, जहाँऊ-
धोसनानकरैंनदघाँटैं ॥ औरसखीनइएकसुनी, ब्रज-
राजबिको टुकचंदनसाँटैं ॥ ९९ ॥

कवित्त—लोककुलवेदलाजजाहितेअकाजकी-
न्ही, जाकेरसप्रीतिबीचसघनसनेरह्यो ॥ तोऱ्योहि-
तइततेसुजोऱ्योउततनयोनेह, जाहूकोनशोचपोचभृ-

कुटीतनेरह्यो॥कूबरीभईहैरानी हमतोबिगानीहाय, तोऊविनदामनकीदासिकागनेरह्यो ॥ नटनागर-क्षेमयुतआपयुगकोटिकलों, चित्तकीलगनजहाँम-गनबनेरह्यो ॥२००॥ आएइतउद्धवलिखाएलाए-योगपत्र, आपनकासीखचेरीदेखेजीजियतुहै ॥ नटनागरप्रीतिकीप्रतीतिकीनरीतिजानै, देखोरीअ-नीतिराजकाजकीजियतुहै ॥ केतिकागिनावैपारना वैयाकीयादऐसी,एकनाअनेकसुनबातैंरीझियतुहै॥ मथुरामेंआजकालऐसीसुनपाईमाई, कूबरीकन्हा ईकीदुहाईदीजियतुहै ॥ २०१ ॥ एहोयदु इंद्रत्यांपठाएआपउद्धवको, सोसबसुनाईहाययों उतधसेरहो ॥ कैसेजगवंदरुकहायेव्रजचंद्रदेखो, चेरीकुलटाकेउरनिशिदिनबसेरहो ॥ नामनटनाग रधरायोक्योंनआईलाज, नंदजूकेनंदइतभृकुटीक-सेरहो ॥ आशिपअमंदऐसेकहैंव्रजबालाव्रंद, मंद-कूबरीकेमृदुफंदनफँसेरहो ॥ २०२ ॥ बसीठीके-

कामधाममथुराकेबीचजाको, आयोयहगाँवनाम-
जाहरसुनायोगाय ॥ सुमुक्तिकाजयोगवैरागकीलै-
आयोपाती, छातीअतितातीहोतजाकेबांचवेको-
पाय॥नटनागरदूरनहमारेघटपूरनहै, याहीपरदेखि-
येजूइतनोअन्यायहाय ॥ मोहनसिखावतेतोसारी-
मिलिसीखजाती, उद्धवसिखावैज्ञानकौंनविधिसी-
ख्योजाय ॥ २०३ ॥ आपभलेआएसाथपत्रहूलि-
खायलाये, सबमनभायेगायेजातनगलानीहै ॥ ह-
महैंगवाँरीबेसवारीसबब्रजवारी, भारीमतवारीएक-
सुनीकांनबानीहै ॥ नटनागरसागरहैगागरसमावै-
कहां, हमहैंउजागरउचारेजामेंहानीहै ॥ ऊधोक-
हाछानीतुमअबलोंनजानीहाय, जैसीउनठानीसो-
तोअकथकहानीहै ॥ २०४ ॥ वृंदावनबीचऊधो-
शंकगुरुलोगनकी, मथुराप्रवेशकैकैनिपटनिशंक-
भो ॥ ललितात्रिभंगीनटनागरकहायहाय;बंकदा-
सीसंगबैठिचित्तहूत्रिबंकभो ॥ कंबूपयगंगकीतरं

गतेमहानशुभ्र, यशकोसमुद्रऐसोवृथायुतपंकभो॥ चंद्रवंशीअवतंसमोहनमयंकशुद्ध, पूरणप्रकाशवी-चकूबरीकलंकभो ॥ २०५ ॥

सवैया—कहाकहूँआपकीयाबुधको,गुणकेतुमलालजूसागरहौ ॥ वहैंकूबरीकोपटरानीकरी, अगुणीहरिजूगुणआगरहौ ॥ नहिंदेखिपरैतुमसेअवलौ, निकलंककलंकमेंनागरहौ ॥ वहैजातकुजातहैकूबरिया, नटनागरवंशउजागरहौ ॥ ६ ॥ अहोउद्धवयाविधिजायकहो, अवकूबरीसेपृथिमादिमेंकोहै ॥ सुरलोकभुलोकरुऔरतलातल, सातहुदीपकोदीपकसोहै ॥ नरीअसुरीसुरीताहिपैवारत सोहनीमोहनीमूरतजोहै ॥ हदजोरोमिल्योनटनागरजू, जोअलेखहिआपअजातहिवोहै ॥ ७ ॥ कामनऐसीलिखीनसुनी, तिन्हैछाँडतनातुमआठहूयामन ॥ यामनमेंतुममायगए, अरुछाँडदियेवरकेपुरधामन ॥ धामनढाककीछाईकुटी, नटनाग-

रजूवहैकूबरीभामन ॥ भामनमेंबासिकीन्हभले, हदकीन्हललापरकूबरीकामन ॥ ८ ॥ वेपतिया लिखिवेजातिया, मतकीछातियाकतियासीखगीहै ॥ काकहिएउनकीगतिकी, इतकीतजिआसकीचेरी-सगीहै ॥ वेनटनागरकानिरदोष, त्रिदोषभरीसन प्रीतिपगीहै ॥ आजहिकालसुनींहमतो, वहकूबरि-याअबकानलगीहै ॥ ९ ॥

कुँडलिया—कुबरीअंगनिहारकै, रीझेथेनँदला-ल ॥ होशजिन्हैंकछुहीनहीं, हालहितेबेहाल; ॥ हा-लहितेबेहाल स्वप्नद्वारापुरआयो ॥ चौंकिच-कितह्वैरहेरूपचेरीकोछायो ॥ नटनागरधारिध्यान-लिखततनदुबरीदुबरी ॥ आधेआधेबोलकढतहा-कुबरीकुबरी ॥ १० ॥

अन्योक्ति सवैया--वरणाश्रमकर्मउपासनमें, हठनेमसुन्योशिरतातेधुन्यो ॥ व्रततीरथयज्ञ पुराणकुरान, मैंनेमको जानिकैनाहिंगुन्यो ॥

पुनिलौकिककहीवेवहारमेंनेम, प्रधान कियोतवना-
हिंचुन्यो ॥ नटनागरनेमसुन्योंसबमें, परप्रेममेंने-
मलख्योनसुन्यो ॥११॥ जाहर हैंकलिकेनरनाहर,
वाहरशुद्धनमाहरमाहीं।माँसतथामदिरादिकसेवत,
लूंटछिनारमहामनभाहीं ॥ सुकृतकाजमेंलाजलगै,
अरुसाधुसमाजकोदेखिडेराहीं ॥ गाहकथेजबथे
नगुणी,रुगुणी अबहैंतबगाहकनाहीं ॥ २१२ ॥

कवित्त–भागीरथरघुअजदशरथरामचंद्र, कवि
नप्रतापदेखोअजौंलगिछाएहैं ॥ नटनागरयादवकु-
रुवंशआदिदैके सब, औरहूअनेकनृप अच्छेप-
दपाएहैं ॥ भोजअरुविक्रमसेकविनकरेप्रसिद्ध, क-
विनजोगाएदाताआजहूंनाछाएहैं ॥ बधरावतद्र-
व्यपायकविविसरायबैठे, बैढजेगँवारतोगँवारनने-
गाएहैं ॥ २१३ ॥अरथकिएहीविनअरथअभ्यास-
जाय, वर्णलघुदीरघकोयथायोग्यकाढिवो ॥ मात्रा-
अनुस्वारछंदभंगकोविचारराखै, स्वरललिताई-

सोंसभाकोचित्तमढिवो ॥ चातुरव्हैचाकरसुनेथेऐ-
सेआखरन, मूर्खहूतेमौनगहैवाकेचित्तचढिवो ॥
नटनागरऐसेजोपढैतोमनमोहिलेत, चित्तनापसी-
जैतोकवित्तको न पढिवो ॥ १४ ॥ कहांशत्रुमित्र-
ताईजामेंवैरप्रीतिनाहिं, कहाँप्रेमनेमजहाँजाहरनि-
वाहना ॥ कहांसनमंधसगेपुत्रभ्रातमाततात, कहां-
कुलगोत्रजामेंवेदरीतराहना ॥कहांनटनागरजूनाग
रता अंगअंग, गुणरूपदोऊमिलेताकीहैसराहना॥
कहांवोहैंबाणजातेअरिकेनहरैंप्राण, तेवेनैंनकहा
लागेंनिकसैंजेआहना ॥ १५ ॥ रूपसोंनयौवन-
सोंकामधनधामहीसों, नामसोंनकामदेखोदीननँदु
नीकेहैं ॥ बीनरुरबावआदिनामकेनआशकहैं,आ-
शकप्रत्यक्षएकमधुरधुनीकेहैं ॥ नटनागरकाहूसो-
विवादकरनोहीनाहीं, जाहरहैहालमस्तताहीवी-
चनीकेहैं ॥ नरकेनगाहकत्योंगाहकननारिहूके,
यारिहूकेगाहकनगाहकगुणीकेहैं ॥ १६ ॥ योजग

वनाएविनकौनभाँतिवन्यौऐसो, जाको कहैं स्वते सिद्धसाफबुधवारेहैं ॥ ज्ञानकोनलेशकौंनिभाँति-ह्वैप्रवेशदेखो, कहाउपदेशकैरभ्रमतमभारेहैं ॥ नागरतादेखोनटनागरकीठौरठौर, जिनकोलखा-तनाहींभीतरसोंकारेहैं ॥ शोधनकियोनसारेनर्त-नविसारिवैठे,वोधमतवारेतोअवोधमतवारेहैं॥१७॥

सवैया–भानुकोक्याउपमानखद्योतकी, रंकस-मानधनेशकोकीजे ॥ साँपधराकेसमानकाशंकर, डोडूसमानकाशेषगर्नीजे ॥ नटनागरसाँचरुझूंठ-समानका, ज्योंकुलटाकुलवानभनीजे ॥ नैंनकी-ऊपमाबाणकीकात्यूँ, कमानकीऊपमाभौंहकोदी-जै ॥ १८ ॥ आलमशेषसुजानघनानँद, जोजग-वीचयाजारअरूझो ॥ रंकरुरावकोभावनहीं, यह-रंगरँगोजिन्हैऔरनसूझो ॥ वाअलबेलीसी लैलि-निहारकै, पूतपठानकोजाहरजूझो ॥ जानअजान-भयेनटनागर, प्रेमकोनेमप्रवीणसोंवूझो ॥ १९ ॥

छंदवरवे—कूकनलगीकुयलिया, मधुरमहान ॥ हाहामित्रवियोगते, निकसतप्राण ॥ २० ॥ मोउरलाएमितवा, विरहदवार ॥ कियउधूरनिजकरते, अपनअगार ॥ २१ ॥ चिहकनलगेचतकवा, वरसनलाग ॥ बूँदपरसमोंअँगपै, मानहुआग॥२२॥ उमडेश्यामबदरवा, केकीकूक ॥ कीनहुमोरकरेजवा, सबमिलटूक ॥ २३ ॥ लागहुमासअसाढहु, भूहरियान॥मित्रविरहजलवहमें, पकरहुपान॥२४॥ मूरतमेरेमितकी, चषउरमाहिं ॥ सोवतजगतहि, चषते, निकसतनाहिं ॥ २५ ॥ एरेमित्रवहांजा; कादुखदीन ॥ सबसुखमेरेअँगते, लीन्हेउछीन ॥ ॥ २६ ॥ छेकेउमोरकरिजवा, विरहवँदूक ॥ तवतेचलतरहेनहिं, हाउरहूक ॥ २७ ॥ देखहुयहविपरितगत, वरसतमेंह ॥ तऊझारनमिटती, प्रजरतदेंह ॥ २८ ॥ देखहुयहकसलाग्यो, नैननमेंह ॥ बूडेजलहिरहतहैं, सूखतदेंह ॥ २२९ ॥ मैंनविरह-

दुखजानत, नैननदीन्ह ॥ काननकरधरशरके, कैसीकीन्ह ॥ ३० ॥ खटकतमोरकरेजवा, मुसकनमंद ॥ काविधिछूटहिहाहा, कोमलफंद ॥ ३१ ॥ मंदमंदमुसकनते, गाफिलपारि ॥ जाविचभौंहकटाक्षन, लीनेउमारि ॥ २३२ ॥ एहोमित्रवहांजा सुधिहुनलीन ॥ विरहव्यथाकियतनको, छिनछिनछीन ॥ ३३ ॥ मित्रमोरादिलसगुणजु, अक्षरया, हि ॥ वसतअर्थसमातितनु, क्योंविलगाहि ॥ ३४॥ सज्जनकथाविरहकी, लखियनजाय ॥ कहिहैंयहअंबुदउत, कछुसमुझाय ॥ ३५ ॥ मित्रभएमोसोंक्यों,कठिनमहान ॥ चलनचहतहैंअबतो, पाँचहुप्रान ॥ ३६ ॥ दीनीमित्रजुदेहै,विपतबलाय ॥ गिनतहुसंपतसोही,कहियनजाय ॥ २३७ ॥

सोरठा--थिरह्वैलहैनथाह, प्रीतिकूपसबहीपरे ॥ निहचैकठिननिवाह,करतेकछुनाहिंनकाठिन॥३८॥ हैयहबातअनूप,अचरजमानतमोरमन ॥ बिनसी

ढिनकेकूप, परैमरैफेरूपरत ॥ ३९ ॥ नाहिनकढ नउपाव, प्रीतिउदधिमांहैपरे ॥ नहिंनवकाघरनाव, नहिमलाहनहितूमरा ॥ २४० ॥ जावेडूबजहाज, जाविचकोपैऱ्योचहै ॥ पहुँचैकाविधपाज, विरह-पवनअतिशयप्रबल ॥ ४१ ॥ लागिउठीउरआ-ग, बुझतनपागेउदधिमें ॥ बूडकढेलेथाग,झरा कढेमुखद्वारह्वै ॥४२॥ विधिसोंनेकविचार, रतीबीं-वक्योंतपततू ॥ विरहादरददरार, पूरणह्वैनविरंचि सों ॥ ४३ ॥ उनकोजतनअनेक, घायलगतके-उशस्त्रके ॥ टाँकापट्टीनसेंक,विरहकटारीसोंविधे ॥ ॥ ४४ ॥ पुनिकितसाँझप्रभात,छिनाछिनबीततव-रषसम ॥ दरदीको दिनरात;कटनमहाअतिशयक ठिन ॥४५॥ जरेहरेहोइजाय, आगपरेआरण्यमें ॥ फेरनहींहरियाय,विरहाअगनीसोंदहे ॥ ४६ ॥ नरतनपुरसोपाय, वरषाकालविचारिकै ॥ विर-हाअतिथआय,उरबिचन्यायनिवासकिय ॥ ४७॥

तेनहिंजामैंफेर, विरहकुहारेसोंकटे ॥ वरषैसुधा घनेर,सिच्छाअंबुदछायकै ॥ ४८ ॥ अजवअ नोखोघाय,विरहशस्त्रअतिशयबुरो ॥ नाटसा लरहजाय, नाहिंसालदरसालना ॥ ४९ ॥ कुल म्रयादध्वजधार, लोकलाजकीनावकर ॥ यदपि- होवैगापार, करणधारकरवेदमत ॥ ५० ॥ विरहा उदधिअथाह, मित्ररूपजामेंरतन ॥ मरनठांनि परमाह, मरजीवाकीधारिमत ॥ २५१ ॥ जापै निधरकनाँच, वरतवाँधिनिजसुरतकी ॥ जबमानै जगसाँच, गेंदबनालैशीशकी ॥ ५२ ॥ हाकेशो दुखदीन, नहिंमाऱ्योपाऱ्योनहीं ॥ पक्षीमनपरहीन, कीन्होंविरहावधिकनें ॥५३॥ नाहिंनलुकनसमाज दिलद्विजबुधिपरविरथभे ॥ विरहअचानकबाज, आनिपऱ्योआकाशते ॥ ५४ ॥ होतछुयेमतिहीन, आयधनंतरहाथकों॥विरहहलाहलपीन, वंचैंनाहिं विरंचिसों ॥ १५५ ॥ तिनकोअतिअनुराग, चारु

बुद्धिचतुरानकी ॥ रागअलौकिकआग, जारन
विरहीजनहृदय ॥ ५६ ॥ विरहीमारनधार, प्रेरत
हैलूलपटको ॥ ग्रीषमअजबगँवार, कहाजरेको
जारही ॥ ५७ ॥ बाणनैनसंधान, भौंहकमानक-
सीसकै ॥ मानहुमदननिसान, छूटतउरमें रुपि
रहे ॥५८॥ लियेसकलसुखछीन, विरहाअग्निलगा-
यकै ॥ आहलकुटियादीन, दिलदीकंमरतोरकै ॥
॥ ५९ ॥ जालिमविरहजवान, कांतसमृतमादक
पिये ॥ ऐंचीकानकमाँन, प्राणबचैंतउखटाकिहैं ॥
॥ ६० ॥ जोजाहीकोखाय, कहोताहिकोडरकहा॥
तारखहूजारिजाय, विरहाभुजँगफुँकारते ॥ २६१ ॥
मोसप्रीतमेंनाय, मोदिलपीतररूपको॥विरहातपत
तपाय, कीन्होंसोनोंसोरमों ॥ ६२ ॥ धारलईचित
धीर, नैनबाणदुखखायके ॥ पंचवाणकीपीर, जात
नबाधाक्योंकरै ॥ ६३ ॥ भौंहकमानकठोर, कान
बराबरतानिकै ॥ त्राणत्वचातनफोर, नैनवाणनि-

कसतभये ॥ ६४ ॥ अँचैमदनमनओप, ऋतुवसंत योवनलहर ॥ लज्जाअंकुशलोप, मनमतंगउनमत्त फिरे ॥६५॥ सोसँयोगसुखदान, वारोंमित्रवियोग पै ॥ येवियोगसंगप्राण, वहसंयोगसुखथिरनहीं ॥ ॥ ६६ ॥ वृक्षलगावतकोय, पयप्यावतरक्षाकरत॥ तोसोंकैसेहोय, बोयबडोकारिकाटिबो ॥ ६७ ॥ इश्कअजबउरझेर, पऱ्योआनिमोशिरपसारि ॥ चाहूँकियोनिवेर, नहिंसुरझतउरझतअधिक॥६८॥ येहोमित्रअनीत, कीनींतैंमोसोंकठिन ॥ हाकैसी यहप्रीति, सुखलैदुखबदलादियो ॥ १६९ ॥ है व्याधीमनमाँहि, सोतूजानतनेकनां ॥ निशितर काढतखाहिं, तनरँगछेदेहोतका ॥७०॥ दिनबीते दुखक्षीण, होतजगतसाँचीकहत ॥ नितप्रति होत नवीन, बिरहव्याधिविपरीतगत ॥ ७१ ॥ पूछे कियेउपाय, जितेसयानेजगतके ॥ दिनादिनदूने घाय, मोंउरतेनाहींमिटैं ॥ ७२ ॥ बचैनयोबीमार,

कोटियतनयाकैकरो ॥ मिलैमित्रदीदार, जीवोंहै याकोजोदिन ॥ ७३ ॥ गईकरैजोखाय, विरहअ-ग्निअतिशयबिकट ॥एकहुनाहिंउपाय,कियोनहै न करैनको॥७४॥ योंदमकतइकदाग, मोउरऊजरबीचको ॥ मानहुजरतचिराग, सूनेशहरअटान ज्यों ॥७५॥ हितकरअधिकहसाय, भोरेह्वैअतिभू-लदे॥फंदनबीचफँसाय,नैनकुटिलन्यारेभये॥७६॥ सुनहुपाथिकममसीख,निकसोजोवापुरनिकट॥दर-शभिख्यारीभीख, माँगतयोंकाहिदीजियो ॥ ७७ ॥ नैनांनिपटअन्याय, कियोसोकैसेमैंकहौं ॥ अबय-हदेखोहाय, करकाननधरदूरह्वै ॥ ७८ ॥ फँदबँध-नाशिथिलात, कालकठिनगाफिलबधिक ॥ मन-खगक्योंअकुलात, अबकाउडिहैछूटिकर ॥ ७९ ॥ भईअचानकभेंट, पाँवसुबुधितूटततसै ॥ चीतावि-रहचपेट, मोंमनमृगकीकौनिगति ॥ ८० ॥ बैठे-मित्रबिसारि, गतिइतकीकितियकालिखूं ॥ बिरहा-

मरुततुषार, जारतमोंमनकमलको ॥ २८१ ॥ करिणीमीतनिहार, कपटफैलऊपरकियो ॥ मोंमनकुंजरपार, नैनबधिकयाविधिलखो ॥ ८२ ॥ विरहाविषमदवार, मनवनकेदाहतविटप ॥ यहअचरजहैहाय, डहडहातनितप्रेमतरु ॥ ८३ ॥ होहिविजयनहिंहार, मित्रसहायकहैनिकट ॥ विरहाबाघवकार, मोंमनयुधजूटतभयो ॥ ८४ ॥ रमनमृगनिरधार, मित्रसहायकहेरमग ॥ कीनोंकहाविचार, वैरविरहमृगराजसों ॥ ८५॥ विरहअमोघबँदूक अभिप्रायहैअस्त्रसम ॥ करत करेजा टूक, त्वचामाहिंदीसेनहीं॥८६॥चित्रमित्रकोचाहि,लखतनलोयनलालची॥ मत मैलो व्हैजाहि, नितप्रतिध्यानकियेकरै ॥८७॥ महामोहतमकूप, जानबूझकैसपन्यो॥तहाँस्वादहैअनूप,परपागेजाकोमिलै॥८८॥ एहोमित्रविसारि, अत्यकठिनधारीकहा ॥ मारनहैतोमार, कैटवारानिरबंधकर॥८९॥विरहवडीवज

रागं, जाकेउरऊपरपरे ॥ कढैसुधासोंपाग, आतशनाबूझैअबश ॥ ९० ॥ बीतीऊमरसोर,बीतीनिशिनवियोगकी, ॥ हाकबह्वैहैभोर, यायोंरहिहैघोरतम ॥ ९१ ॥ बरषतहैऋतुएक,उमँडमेघअतिगर्वयुत ॥ क्योंनहोहिवितरेक,षटऋतु चषवरस्योकरै ॥ ९२ ॥ प्रेमतरूनिरमूल,कियोच हैदुर्जनवचन ॥ होतसघनफलफूल,द्वैससुधाजल पायकै ॥ ९३ ॥ दुर्जनवचनकुठार, छेदतनिश दिनप्रेमतरु ॥ छिनछिनबढतबहार,प्रीततोयपोषणकिये ॥ ९४ ॥ छुईनविपतिशरीर, बातबनावैविहँसिकै ॥ चष्मजख्मकीपीर,कोजानैखाएविना ॥ ९५ ॥ दोहा॥ दंपतिप्रीतिसुपरस्पर,योंभासतदुतिअंग । बहुतदुरायेदुरतनाहिं,ज्योंसीसीको रंग ॥ ९६ ॥ मनभीज्योरसरागमें,अधिकबढावत आग ॥ हैसंयोगश्रृंगाररसर,हैवियोगवैराग ॥ ॥ ९७ ॥ गजयोवनउनमत्तचल्यो,अँचैमैनमद

ओप॥शंकासंकुलतोरिकै,लज्जाअंकुशलोप॥९८॥

छंदद्वावर्त–जियरेधकलागीहै विरहानलज्वाला की॥मानोक्योंपूछोतुमबातैंमतवालाकी॥औरतोह मश्यमाउपवनमेंअविलोकीथी॥झटपटकेलटकेपर नजरोंकोझोकीथी ॥औरोंसबसखियोंकेआगेचलि- आतीथी ॥ रीझीरिझवातीअरुगातीबजवातीथी॥ दान्योकनदाँतोंपरमिस्सीदिलवाईथी॥ तापरमि- लसखियोंनेबीडाखिलवाईथी ॥ झुकझुकतेलटक- नपरवेसरकेझालेते ॥ प्यारेरसछकियानेंनैनोंके प्यालेते ॥ बासनविचजाहरगतिजूडेकीबाँकीथी ॥ धानुषकेनागनछवि ऐसीउपमाकीथी ॥ मा- जिमपरसोहैंकरभौंहैंमटकातीथी ॥ खोंचेरसि- कनकेमनभीतरखटकातीथी ॥ लोयनकेकोयन्- परअलकैंदोलटकेथी ॥ भारीमतकावियोंकीउप- माकोंभटकेथी ॥ चटकीलेचेहरेपरबंदीछविदेदी- त्यों ॥ चंद्रासनवूडनभाहैदीसरमेंदीत्यो ॥ भौंहैं-

अलसोहैंटुकटेढीकरभालेथी ॥ जालेदिलआश-
ककेतिनकोफिरजालेथी ॥आखेंपरकाजरकीरेखेंअ
धिकातीथी ॥ प्यालेमोहब्बत्केभरपीतीअरुप्या-
तीथी ॥ बातैंमुखपंकजतेक्याअच्छीबोलीथी ॥
खतर वा प्यारेकेचितकीवृतखोलंथी ॥ साँचेकी-
ढालीसीबाहिंयोंपरसोहेथा ॥ मनमथकीफाँसीज्यों
बाजूबँदमोहेथा ॥ नखरेतेसखरेपरबंधोपरनच
तीथी ॥ जाचकहुयआँखोंवारूपाहिकोजचतीथी ॥
दावनकेदारोंपरजरकसूकुछदमकीथी ॥ चकचौं-
धीपडपडकैआँखेंदोयचमकीथी ॥ दुपटाउडघूमर
तेनाभीटुकदरसीथी ॥ प्यारेकीअभिलाषापरतर-
सोथेपरसीथी ॥ तालीकेपटकापरचटकीकालटका
था ॥ भटकाथाखटकाइकझटकादोवटकाथा ॥
झाझरझरनाहटपरजेहरकाझनकाथा ॥ ठुमकेग-
तढीलीपरबिछुवनकाठनकाथा ॥ भुजउलट-
नझुकनेपरछूटनगतिभिडतीथी ॥ झालायुतगु

जरीनगविज्जुरीसीझडतीथी ॥ गोरीसीबाँहियेंपरगु घरीगरनावेथी॥ झुमकझुमकलहँगेपरकाँचीझरनावेथी ॥ जुमलेसँगआलिनकेझूलेचढझूलेथी ॥ हस्तीमतवालेमनमेरेकोहूलेथी ॥ मसकेतनसमसके रसवसकेमदप्यातीथी ॥ कातिलकोफिरकातिल करनेकीकातीथी ॥ बानिकतेबागनमेंसखियोंवि चवैठेथी ॥ आशकबेलाशकचषनाशकाविचअैंठेथी ॥ जाकेचषअनियारेलागेसोइजानेंगे ॥ मुख डेकीवातैंविनभुगतेकसमानेंगे ॥ २९९ ॥

दोहा–भुजउलटनउकसनकुचन, मुसकनभ्रुवतिरछान ॥ कमरभ्रमणघुमरनवसन, उरउरझ तगतिआन ॥ ३०० ॥

छंदद्वावर्त--यारोनिशिसोवतइकसुपनासाआयाथा ॥ जाकोलखिमेरेउरआँनदघनछायाथा ॥ सोउसकोजाहरकहिकछुयकवतलाऊँमैं ॥ गानां नहिंवाजिवपरकछुयकतोगाऊँमैं ॥ देखामहलाय

तएकपलकोंकेलगनेमें ॥ वैसीकहिंपेखानाजाहिर बिचजगनेमें ॥ उसकीतैयारीथीमानिंदगुलक्यारीके ॥ जिसकेथेपरदेचिककिम्मत्तजरभारीके ॥ सोधकेझोलेउसभीतरउठिआतेथे ॥ जापरमतवारेहैमधुकरझुकजातेथे ॥ थीउसमेंदीपककीवत्यों कीमालेंसी ॥ जिसपरथीफाँनूसेंमनमथकीजालेंसी ॥ निश्चलसीजोतिनकीउपमादरसावेथी ॥ मौनीवैरागिनिमिलिब्रह्महिकोध्यावेथी ॥ उनहीआवासोंढिगसुंदरबागीचाथा ॥ मानहुद्रुमसारेजलअमृतकासींचाथा॥जामेंबहुकेकीअरुकोकिलमिलबोलेथे उरझेमनवालोंकीगांठेंसबखोलेथे ॥ बैठीथीबुलबुलउसभीतरबहुन्यारीसी ॥ आँखोंबिचसबहीकेलगतीअतिप्यारीसी ॥ मजलिशउसजग्गेकी ऐसीदरसावेथी ॥उपमाकोहेरतमतमेरीघबरावेथी॥ थेउसमेंकारीगरगानेकेकामिलवे ॥ गाफिलहुइजावें सुनिअच्छेहढआमिलवे ॥ आसवकेसीसेरँगरँगके

मँगवायेथे॥ प्यालेमतवारोंयुतसबकोपिलवायेथे। खिचतीथीकाफिरनींसारंगयोंकूकेथी ॥ चतुरोंकी पँसल्योंविचकूकेमनुहूकेथी॥ तबलोंशिरथापीलग लच्छैंपरदोंकेथे ॥मानोघटदोनोंवेपूरणदरदोंकेथे॥ सारातनआँखोंविचआतशकाज्वालाथा ॥ कॉनों विचजाकेलघुदामिनिसाबालाथा ॥ तानोंकीउप जोंकरकाँनोंधरलेतीथी॥ आशकमतवालेगजअंकु शशिरदेतीथी॥ हसनाकहिबोलोंकोतीखदगकस नाथा॥ फैलोंकीघातोंबिचनाहकदिलफसनाथा॥ पाऊंधराडिवडेगतिझूमेझुकजानाथा॥ हातोंकीधा-तोंकमनैंतीदिखलानाथा ॥ जिनकेमुखआगेकुसु-मायुधशरमाताथा॥ इनकीसीउपमाकोवोभीकब पाताथा॥ उनकेकरकंगनसँगचुरियांयोंचमकेथीं॥ उसपरसबमजालिशकेशीरोंयोंझुमकेथीं ॥ यारोस बबीततहाआँखोंगईमेरीखुल ॥ जगनेपरआयानहिं नजरोंविचएकोगुल ३०१

अथ श्रीमहाराजकुमारकृतपद, टप्पा, ख्याल, ठुमरी लिख्यते ॥ भीमपलासी॥

दिलदेदीदेखोलदिवाने ॥ रबकीकुदरतदेखज लविंदुतेदेहबनि विविधिभूषणभेष ॥ बोलत गिराअमृतसमसुंदरजाकेरंगनरेष ॥ दिवाने०॥१॥ पाँचतत्वचेतनकाहेतेडोलताविविधिविशेष ॥जावि नशुष्ककाष्टवतछिनमेंसोहीपुरुषअलेष ॥ दिवा ने० ॥२ ॥ मातपिताबंधूत्रियभाईमित्रीपुत्रसुवेष ॥ प्राणप्रयाणसमयसबठाढेकरतकुलाहलपेष ॥ दिवा ने० ॥ ३ ॥ कामक्रोधमदलोभमोहाबिचबूडेसबउ नमेष ॥ नरतनमूढकरतगरुवाईतूँउरूपाकपरेष ॥ दिवाने० ॥ ४ ॥ सारंग ॥ झाँविचालाँथारीलार ॥ पिहरियेझाँरे ॥ डूगरियाहरियाजलभरिया ॥ सूराँ तणीशिकार॥ नटनागरहरश्यामनकरश्यामदडा रीमनुहार ॥ २ ॥ फगुवा ॥ नटनागरमचलरह्यो

माई ॥ नटनागर ॥ होतअकेलोततोखबरपारती
एरीसँगलिएहलधरभाई ॥ नटना० ॥ जादिनमुक
टपीतपटछीन्योएरी वादिनकीसुधविसराई ॥ नट
नागर० ॥ ३ ॥ डफवाजतगरूरभरे ॥ नटनागर
कीविजयउचारत ॥ द्वारद्वारदुरिहारपरेडफ०॥४॥
डफवाजतकुटिलकन्हाईके ॥ नटनागरकेधींटलँग
रकेहलधरजूकेभाईके ॥ ५ ॥ यमुनाजलभरनक
ठिनआली।यमुनाजुल ॥ मधुरमृदंगझाँझडफबाजें
गतनाचतहैंबनमाली ॥ निलजनिशंकनिपटनटना
गर जाहिताहिकोदेगाली ॥ ६ ॥ मनलाग्योमेरो
ननँदीक्योंबरजै ॥ नाहिनशंकनिशंकभईमैंउमडघु
मडगोकुलगरजै ॥ नटनागरसोंमिलूंउजागरत्रासव
ताएकोतरजै ॥ मनलाग्यो० ॥ ७ ॥ डफआ-
गेजावजोरसोरभरमधैरें ॥ डफ० ॥ सासु
कीत्रासउदासरहोंहोंननँदीनाचनहासकरैं ॥
नटनागरपगफूंकधरेतोउ चतुरचुगुललखिचौंक

परैं ॥ डफ० ॥८॥नटनागरछैलअनोखोरी॥नटना
गर० ॥ हमेंतुह्मेंडरनाहिंसखीरी जोकुलवानातिन्है
धोखो ॥ लालगुलालअंगलिपटानेश्यामवरणतन
चोखो ॥ मोरमुकटपीतांवरसुंदर कुंडलकोहद
झोखो ॥ नटना० ॥ ९ ॥ दादरा ॥ प्यारेप्यारीक
रकैबिसारोगे ॥ कैसेरहैंगेप्यारेप्राण ॥ नटनागरदु
खदापसहौंगी नाकीजैहितहान ॥ प्यारे ॥ १० ॥
॥ कहरवा ॥ ननँदीकाहेकोमुहारेबाँकेकस्योही
करै ॥ मेरीलागीहैबिहारीजीसोंलागलागलाग॥कुल
कानकेऊपरअबहीधरदीमैंआग॥ननँदी०॥नटनाग
रउजागरसोंमेरोमनपाग॥तासोंमिलूंमैंतोतनमनध
नसुखत्याग ॥ ननदी० ॥ काहेकाअधरतेरेडस्यो
हीकरै ॥ मेरोलागीमोहनजीसोलाग ॥११॥काफी
दीपचंदी ॥ सखीरीआजश्यामअनुरागरँगमासो
खेलनआएफाग ॥ उरह्वैचिन्हऔरपदअंकिततुर-
तसेजसुखत्याग ॥ चिबुकअरुणअधराकजरारेर-

हेमहाश्रमपाग ॥ सखी० ॥ रदछदरेखनखक्षत लागेकियेनैनरतजाग ॥ नटनागरऐसीछबिनिरखे उदयभएममभाग ॥ सखीरी० ॥ १२ ॥ मांडचा हीमनास्याँरूठो । छेएधूलोम्हासूँहे ॥ ओलूंभा सुणांलाहेली ॥ ओठाहीसुणास्यां ॥ नागरनटसमु झास्यां ॥ १३ ॥ वंशीमनवसकरमतमार ॥ वैर नहाथलगेकातेरे । तेरेदुखअतिदुखितभईहूँजासों- कहतपुकार॥नटनागरवेदरदनिठुरहैंतूतोनेकाविचा र॥१४॥ सखीआजश्यामकोपकरनचाऊंतोवृषभा नुकुमारि॥अंजनआँजकरूंदृगकारे गुहिडारौंउरहा र॥चोलीचारुचटकरँगचूनरपाँयनपायरपार॥सखी ०॥वेंदीभालकानविचझूंमर विनताज्योगुहिवार ॥ नटनारऐसीछबिनिरखो फेरकरोंहुरिहार॥सखी०॥ १५॥देश ॥ ह्लानेतोलारॉलीज्योराज॥थाँकारणकु लकॉणगमई छेहनदीज्योराज ॥ ह्ला ॥ नटना गरवृंदावनकीनीं वामतकी ज्योराज ॥ ह्लाने० ॥

१६ ॥ आँखाँलाँबीतीखीवाँकीमुरडभरी ॥ रूडिमुरडभरी ॥ नटनागरऊँचीपुनिनींची बाँकीऔरतिरीछी ॥ बाँईसलजदाहनीचितवन विषमडसतजनुबीछी ॥ आँखाँ ॥१७॥ लोयनबिचफैलभऱ्योहैकिफंद ॥ कपटभऱ्योहैकीप्रीतभरीहै भूतभऱ्योहैकीजंद ॥ नटनागरमोरेठीकपडीनहिं साँचीकहोजीमुकंद ॥ १८ ॥ काहेविषघोल्योराधेनैननबीच॥ घोल्योसोतोचषअनियालाहैनागरभौंहनगीच॥नटनागरनेंजहररच्योहैसुधाटष्टिकरिसींच ॥ काहे॥१९॥ ॥ माऱ्याहींन्हाखैछैथाँरासोंह ॥ नटनागरतिरछीसीचितवन जगठगणीछैलगणीभोंह ॥ माऱ्या० ॥ २० ॥ देख्याईजीवाँछाँप्याराासेण ॥ अजकलगीछैअबतो ॥ देख्याई० ॥ झलमलमुकटकुंडलरोझालोबालालागेछैथाँराबेण॥देख्या०॥नटनागरनिरखणदोनूखरो मतजीचुरावोवाँकानैण ॥देख्याई० ॥ २१ ॥ आछाँरीज्योंआपह्लानैंविसरमतजाज्यौ॥

मथुराजायज्यौछायरहोतो पतियाँबेगपठाज्यौ॥
नटनागरऊजडकरचाल्या ब्रजहरिफेरबसाज्यौ
॥आछाँ ०॥२२॥ होजीहटछाँडोराधेजीनिप
टनिठुरताईजोर॥ आपतणाँझगडामैराधेअबतो
हैहैभोर॥नटनागरनिरखणदोनखरोजितिहाँरोगूँघ
टकोर॥२३॥बना॥ बनीचितलाजमनोजसता
वै॥ दोऊबीचजियादुखपावै॥ब०।लाजकहत
नटनागरलिखनामदनसलहाउलटावै॥ ऐसीरीत
विलोकितलौकिकचतुरनकेमनभावै॥२४॥ब
नाजीतेरीसूरतमदनसँवारी॥सबनिरखछकेनरना
री॥ रतनजटितसेहराशिरसोहतकलँगीकीछवि
भारी॥नटनागरदुल्हहउतदुलहन श्रीवृषभानुदुला
री॥२५॥बनाजीथाँरीलटकचालपरवारी॥सब
निरखछकेनरनारी॥बनाजी०॥ सूवापागकेसरिया
जामाँजापरगजबाकिनारी॥नटनागरऐसीछबिनिरख
तदुलहनराधाप्यारी॥२६॥ निपटअनोखालोय

णमुरडभऱ्या ॥ अतिअलसाणसुनिंदेपणसूँजनु दोयललालधऱ्या ॥ नटनागरक्यूँकपटकरोछोजाहर जागकऱ्या ॥ २७ ॥ सोरठ ॥ काँईअणियालानै णालागभरी ॥ अ० ॥ जोदेखेजाकोमनहींमसतहै कैसीजकपकरी॥नटनागरविनमोलकीचेरीगोपीभा गभरी ॥ २८ ॥ ह्माँनैतोकरोहिगाजीदिलसूँदूर ॥ नवलनेहकुवज्यासूँकीनोउणकेरहतहजूर ॥ ह्माँसूँ तोअपराधवण्योछेभूलोक्यूँनजरूर ॥ नटनागरके दोयमुसाहबवेऊधोअकरूर ॥ २९ ॥ ओ लूडीआवेछेनिराट ॥ ओजिओछोगालाथांरी ह्माँनै ॥ ओ० ॥ प्राणपतीजीउमरह्मारी वीती जोताँबाट ॥ नटनागरक्यूँविलमरह्याछोविकट हुवाकीघाट॥ ओ० ॥ ३० ॥ हेलीह्माँनेनिंदियान आवै ॥ छिनछिनविरहसतावै ॥ हेली ॥ नटना- गरसुदभूलगयाछेकुणवाँनैंसमुझावै॥हेली० ॥३१॥ धीराधीराहालोराविहारीजी ॥ लाराँथारीआवाँ ॥

सबसखियांह्मांरीगेलपडीछेपाछीफिरसमुझावाँ ॥
नटनागरथाँप्रगवकरोछोह्मेछानैंछानैंप्रीतछिपावाँ॥
॥ ३२ ॥ दुखमतदीजोजीप्रीतलगाय ॥ होजीरू-
खावचनारोजी ॥ फीकानयणारोजीदुखमतदीजो-
जीप्रीतलगाय ॥ नटनागरव्रजबालविसारीयूँनवि-
सारोहाय ॥ दुख०॥ ३३ ॥ ख्याल॥बालहीकरदी-
ज्योनाँसुरत विसार ॥ होजीमनमोहनप्याराजी ॥
बाल्ही० ॥ छलबलनिपटकपटपटकरणीराखत-
होरिझवार ॥ नटनागरसुनगोपियनकीगतडरपत-
प्राणअधार ॥ ३४ ॥ कालिंगडा ॥ लाग्योथाँरा-
नैणारोसलूणोपाणीलाग्यो ॥ लोकलाजसबहीतज-
दीनींगुरजनरोभयभागो ॥नटनारज्यानेछेह्वताओ
सूताछोकिनाजागो ॥ लाग्यो० ॥ ३५ ॥ दीठो-
थाँरीप्रीतरोपतंगीरँगदीठो ॥ लागतबेरकसूँबीसो-
लाग्योफेररह्योनाहिंछीठो ॥ नटनागरह्माँबहुतर-
चायोनाँहिनहोतमजीठो ॥ दीठो ॥ ३६ ॥ रासि-

याजीवेराजीबोलोजीभलाँ ॥ थाँराचितरोचाह्यो-
कीनौंजीभलाँ ॥ ज्योचाह्योसवहींथाँकीनोंमनरी
गाँठाखोलोजीभलाँ० ॥ नटनागरमेटीजेझगडो
लीजेनवलमाहोलोजीभलाँ ॥ रसि ० ॥ ३७ ॥
दादरा ॥ लागीलागीजरूरभोरिनजरकहुँलागी ॥
नटनागरकीसौंहकरतहौंविरहविथातनजागी॥जरू
रभोरी० ॥ ३८ ॥ लागेलागेजरूरनैनाकुटिलकहुँ
लागे ॥ नटनागरजाहरगुनगुनियतप्रेमउदधिकहुँ
पागे ॥ कहुँपागेजरूर लागेलागे ॥ ३९ ॥ वाँ
काथाँरानैणअदाँकाउडलागै ॥ लागतहीसुधवुध-
बिसराइरोमरोमविषजागै ॥ नटनागरतनमनधन-
सोंप्यो अबकहिजियरोमाँगै ॥ ४० ॥ घणासा-
वरघाल्यानोखानैणानै ॥ घणा०॥ इणव्रजकीउ-
पहाँसनअटक्याहोयमसतमदहाल्या ॥ १ ॥ न-
टनागरबरज्यानहिंमानैब्रजतहीवढचाल्या ॥ घ-
णा० ॥ ४१ ॥ दीठीधीठानैणारीअनोखीगतदी

ठी ॥ अंजनसहितबिहदहदबाँकीमदछकलागत मीठी ॥ नटनागरउरकंपकढणकूंअदभुतदोयअँगीठी ॥४२॥ मदछाकेनैणाबाँके॥विनअंजनअधिकअदाँके ॥ कंजखंजमृगमीनाविनिंदितहोतकटीलेढाँके ॥ नटनागरउरपारकढतहैनिरखतनेकनिसाँके ॥ ४३ ॥ मोरेनैनारहतछबिछाके ॥ छाके २ अघायमोरे०॥नागरनटलखिलटकरीझिगयेरिझवारअदाँके ॥ ४४ ॥ कालिंगडा ॥ कहोजीक्यूं नआवोआवोह्यांरेदेस ॥ मूरतकोटिमनोजलजावणक्यूंदेखणतरसावो ॥ नटनागरज्योढीलकरोलातोपाछेपछितावो ॥ कहोजी० ॥ ४५ ॥ सोहनी॥ पमाँपमाजीकरहारीपलव ॥ लियाथानेअंजनअधरपीकपलकाँपर ईछबिरीबलिहारी ॥ नागरनटअलसाणअनोखीछायरहीछबिथाँरी ॥ ४६ ॥ परज ॥ उधोजीक्यूंलायाकागदकपटभऱ्या ॥ जोअकरूरकरीसोइजाणीथाँराकरतकऱ्या ॥ न-

टनागरनोओरभरोसोविसरायांविसऱ्या ॥ ४७ ॥
कहतालजावाँछाँजीओगुणथाँरा ॥ उत्तमप्री
तकीरीतनजाणोनीचप्रीतवसऱ्याँरा । नटनागर
छोजीथाँनिरगुणक्योंरीझोगुणम्हांरा ॥ कह० ॥
॥ ४८ ॥ ऊधोफरपधारेहोव्रजमें ॥ प्रथमआयउर-
जारगएथेकछुकरहेअवजारैं ॥ ऊधोवेगसिधारो-
व्रजतेंतुमजीतेंहमहारैं ॥ नटनागरसोंयोंजाकहियो
कुवज्याकौंनाविसारैं ॥ ४९ ॥ ऊधोजीकरोछोआ-
छीवाताकूडी ॥ ज्ञानभक्तिवैरागसिखावो एक्यूँ-
लागेरूडी ॥ नटनागरपणजोगलिखेछैप्रेमरीतसव
बूडी ॥ ५० ॥ माधोजीपठाईपातीज्ञानभरी ॥
प्रेमसुधारसमूरलिख्योनाविषकीपोटधरी ॥ नटना-
गरइतकीसुधविसरी कैसीकठिणकरी ॥ ५१ ॥
उधोजीथाँरेसोमणतेलअँधेर । योगसिखावतभोग-
कमावतवाकुवजाकीवेर ॥ नटनागरछेचोरजनम-
कासकैप्रकाशनहेर ॥ उधो० ॥ ५२ ॥ ठुमरीमुल

तानी ॥ज्यानीजीसेजुदीमतकीज्योरे॥ मतकीज्यो दुखमतदीज्योरे। नटनागरतेरीचेरीकीछिनछिन-मेंसुधीलीज्योरे॥८३॥ ज्यानीतोसोंकवूनाबोलोंरे॥ नाबोलोंनाबोलोंनाबोलोंरे ॥ नटनागरतोसेकपटी-सोंकपटगाँठनाँखोलोंरे॥ ज्यानीज्यानी० ॥८४॥ नपूछ्योतुमगोपिनतेप्रेमनगरकोपंथ॥ तुमप्रेमन० नटनागरकछुरीतनजानीहोकुबज्याकेकंथ ॥ नपू-छ्योगोपिनतेतुम ॥ ८५ ॥ सोवनदेसैयाँनेक-ठरकगईआधीरैन ॥ नटनागरअतिनींदसतावत नींठसमेंअबलादीरे ॥ ८६ ॥ टप्पाजिलाके ॥ खेडोंदाजाणानहिंखूबामियाँवे ॥ नागरनटखटलोग वहादेसवजालिममहबूबामियाँवे ॥ ८७॥ छँदडेजा नीतैंडेवेजिदडीमैंडी ॥ जानीतूँ ॥ नागरनटतैंडदे खेविनवेकलियाँदिलनू ॥ ८८ ॥ हरदमरेदीतैंडी यादामियाँवे ॥ नटनागरतैंडेविनमैंडादिलकरदाफ रियाद ॥ ८९ ॥ इस्कोंदाउलझेडनसुलझैगाज्या

नीवे ॥ नागरनटअबक्योंघबरांदाज्योंनिवडेज्योंनि
वेड ॥ ६० ॥ सांडेनालबेदिलनूँकितावरबाद ।
नागरनटज्योंज्योंदुखदेंदाकितकरदीफरियाद ६१
ऐधुलापनाँसूँहेलीहेमाडयाँहींमिलाँल ॥ नागरनट
ह्नांसुँमुरडरह्याछे दाँवणजायझिलाँल ॥ ६२ ॥
प्यारेसाढेमुखडेदाझमकादिखलादे ॥ हाहातैंडेमु
खडेदा ॥ नटनागरकछुओरनचांदाअजदीदारछ
कादे ॥ प्यारे ॥ ६३ ॥ झाँकीकरादेतैंडीबाँकीन
नजराँकीमानू० ॥ नटनागरवेअदाँकीआँखे बिष-
लानेविचकीदुखसानूँ॥ ६४ ॥ भैरवीठुमरी ॥ नैना-
हमारेदुख्यारेभएसखियाँनँदवारेकारेबिनां ॥ कारे-
बिनाबँसीवारेबिना ॥ नटनागरहगउमगचलतेहै
प्यारेतिहारेनिहारेबिनां ॥ ६५ ॥ झंझोटी ॥
मचलरह्योवृषभानुललीसों ॥ नटनागरचितवहुत
निठुरहैकटिकुचमारैगुलाबकलीसों॥मच० ॥६६॥
मिठडीतैडीमैंमीठेबोलसुणाजा ॥ मानू ॥

नागरनटइकगल्लसुणादेजाविचबारलगैकीसाँन ॥ ॥ ६७ ॥ जटियोंदेजालिमनैणवचाणा ॥ जाहर नैणजटीदेजालिम तूँकीकारणहोतानिसाणा ॥ ॥ ६८ ॥ साढीगलियोंविचआणानभादासानू । गोरेदेनालयारदीवातै दिलउस्याकेडुखाँ दाकानूँ ॥ ६९ ॥ फाग ॥ अकेलीपारकैमोकूँरँगमैं भीजोयडारीरे ॥ धीटमोकूरंगमैंभी०॥कुटिलमो कूरँ० ॥ नागरनटतोसोंसमझौंगी निठुरमोकूँप करभिगोयडारीरे ॥ दयारेमोकोपकरबिगोयडा रीरे ॥ निलजमोकूँप० ॥ ७० ॥ पनघटपरझुरम टजाटियोंदा ॥ जटियोंदानटखाटियोंदा ॥ नटनाग रवैहँवाटकढोकोउझटपटह्वैदाखटियोंदा॥ ७१ ॥

ठुमरी—जीराजाथेरनजरियाँलागी ॥ नटनागर कोइवेगबुलाओ अजबव्यथातनजागी ॥ जीरा जायरे॥ ७२॥ खम्माच॥ऊधोजीविसारीह्माँनैमथुरा

जाय ॥ ह्वाँतोप्रीतकरीछीवाँसूकुलकीरीतगँमाय॥
नटनागरसारीसुदभूलथाकुवज्यादौलतपाय॥७३॥

॥ इतिरागख्यालटप्पासंपूर्णम् ॥

सवैया--गहिबाँधेयशोमतिऊखरसों, तिनकोचितक्षोभसह्योकरिये॥गुघरारेलटाभरेगोरससोंभयेधूसरधूरवह्योकरिये॥नटनागरचाहचढीचितमें, तिनकोचितचारुचह्योकरिये॥अहोमाँखनचोरएहीछविसों,मेरीआँखनबीचरह्योकरिए ॥१॥ मोरकेपाँखनकोशिरभूषन,काँखनवेतगह्योकरिये ॥तबताछिनकीछविकैसेकहौं,लखिलाखनमैन दह्योकरिए॥नटनागरभाषणबीचनहीं नितदाखनस्वादलह्योकरिए ॥अहोमाँखन०॥२॥ गुंजराहियरेबिहरेतनशोभितधातुविचित्रलह्योकरिये ॥ बँसुरीवनमालकँधाकमरी,लकुटीकरबीचगह्योकरिए॥ नटनागरमोरपँखाशिरभूषण,गोधनसंगवह्योकरिए॥अहोमाँखन०।३।

॥गुणहींविनहारहियेउघरे,दृगलालनलालीवह्योक-
रियें॥अधरांनपैअंजनभालमहा, वरभूषणअंगहयो
करिये ॥पलपीकलग्योनटनागरजू,अलकैंबिथुरीउ
मह्योकरिये॥अहोमाँख० ४ ॥ यहवेणीगुहीगहिकै
ललिता,शिरचूनर चारुसह्योकरिये॥ किनचोलीर
चीअतिचातुरीसों,नथवेंदीविशाखावह्योकरिये॥न-
टनागरपायरपायनमें, वृषभानुसुतायोंचह्योकरिये
॥अहोमाँखन० ॥ ५ ॥ मघवाजबकोपकियोव्रज
पै,वहैकोपकोलोपवह्योकरियो ॥ गिरिकोकरधारि
उवारिकैगोधन,गोपरुगोपीचह्योकरिये॥ नटनागर
वेणुधरीअधरांनहि,प्रीतिवियोगसह्योकरिये॥ अहो
माँखन०॥६॥वलकेशवधायधरीमथनी,नवनीतभ-
रेसुचह्योकरिये॥इतदेहरीद्वारखरीयशुदा, सुततक्र
भरेसुलह्योकरिये ॥नटनागरलालसुनोंइतनी,अबमैं
जोकहूंसोकह्योकरिये ॥ अहोमाँखनचोरए० ॥७॥

निसानीशिरखुलीमहाराज रतसिंहजीकी।

तखतजहाँशिरआली दिल्लीशहरशाह ॥ शाहोंशीशकमाली आदिलशाजहाँ ॥ दहशतजाहिकराली सातौशाहशिर ॥ तिनदाहुकमअदालीऊपरहिंददै ॥ फरजँदबहुतखुशालीअरबहंनोबाहार ॥ औरंगदखणउथालीपूरबसुजशाह ॥ मुहुमोबहुतकरालीबगशीबादशाह ॥ धुरबदखणउथालीतेगोंमारमार ॥ वोहोतादिनोंबहालीवैसेहीरही ॥ दिल्लीऊपरहालीसेनदुहुंनदी ॥ अकबकधरबेहालीमौलाक्याकरै ॥ शाहजहाँसुनह्वालीदरदाँबीचादिल ॥ बाईसीशिरघालीजेसिंघजेनगर ॥ पूरबसथ्थेचालीसहसौंकरनजग ॥ औरंगशीशहकालीनवखंडमारवाड ॥ सित्तरखाँनधमालीबहत्तरउमराव ॥ जसवँतमूहअगालीबोलत-

आफरी ॥ शाहहुकमशिरझालीअदबवजावरद ॥ दस्तवस्तमुहलालीसहसौंयूँअखाँ ॥ हुकमकहासः हसालीवंदारूवरू ॥ हुकमदादरुहआलीऔरँगखा-कसाक ॥ वारय्यावकरचालीसेनजसाहुदी ॥ तेग-दस्तवरझालीफीलसवारहै ॥ दस्तमूँछवरघाली जसवँतयोंअखै॥ फौजकरौंवेहालीपकडूँपादशाह॥ सेनचलीधरहालीदंतवराहडिग ॥ लचकैशीशफ-नालीचारौंदिगडोल॥ कच्छपपीठतपालीमरदौंमच-कलग ॥ नदियोंथकितरहालीसुनजसवंतनू ॥ समदशोपभयखालीखंगेतेगगहि ॥ ऐसीसेनजला-लीवरऔरंगजेव॥ खेतउजेणसझालीतेगौंतीरकज॥ औरंगसुनअहवालीसोजसतनवदन ॥ दढौंकूँचाढि-यालीवीवेवहुतसँग ॥ जमडरवीचदहालीजालमतु रकालिय ॥ चीतैसेरलेयालीमारैमूंकियो॥ पीयेमद वहुझालीनुकलकयजूंमसा॥मुगदरवोहोतावशाली खूवाहिलाँवदे॥तीरंदाजअकालीमारैमोतियों ॥देख

णाख्यालकरालीऔरँगनौअरुज॥ हल्लीसैनउताली पोसदआपताव॥ पिछ्लेरहेत्रखालीअगलौंआवमि ल॥ दोऊसेनसुथरालीअंखौसेअखी॥ जसवंतफौ जसँभालीभैयारतनकहाँ॥ फिदव्योंनेगुजराली राजारतनपुर॥ साजजूदगयचाली लेणरठोड नूँ॥ सुरथलिखेरतनालीदिलह्वाबाकबाक॥ खत नजरौंबिचभालीतोसाखानखुट॥ बगतरझिलम कडालीसुंडौपरव्यारो॥सकलीगरौंउतालीहक्केकूब कू॥ सेफौबोसुथरालीअंगुलबाडखिच॥ रतनाग रउमगालीबरशिरसहजदौं॥ त्यारकियेतेजाली चढियेउरसखंब॥ मनाघटाकजरालीबादरजोश आव॥ वहदीजमुनकरालीमिलसामुद्रमझ॥ रत- ननजरबिचभालीजसवंतभारधर॥ अबअखबार सुनालीकालगिरँदनू॥ सुनकैभईखुशालीजंगवि- चगुसलदी॥ सबबीततनभलालीचखतोपैंलिखै॥ दिल्लीतखतकरालीतेगोंबाडपर॥ औरंगसुनअहवा

लीआगव्रजागजग ॥ नौरंगउलटकहालीवोहोतहै खूबवात ॥ तोपैंदगतकरालीफौजोहलचली ॥ अखअलाअलयालीखिबरखूटए ॥ हरियकबागों हालीटूकपहाडदे ॥ बाजैंखगइकतालीवररुखमुग-लयो ॥ खागोवाडखरालीआपसबीचखूब ॥ देखन ख्यालकपालीभागेध्यानतज ॥ चौसठलखखपरा-लीहडहडहँसतवे ॥ कलकैबीरकरालीहलकैसा कण्यो॥गोराकालाकालीविहवलह्वैरहे॥भूतप्रेतढिग चालीमानोकरनवत ॥ हूरपरीसबकालीमानोभं गचित ॥ छंडवेमानौचालीशिरपररतनत्रास ॥ गोकुलतुरकविलालीसुरपतरतनसी ॥ तेगोंत्रझड झडालीपहरोंतीनलग ॥ रुधिरनदीउबकालीमथे मच्छरूप ॥ मीनतडफज्योंजालीवगतरबीचधड॥ गृध्रअंतलेचालीजिनुपतंगडोर ॥ रतनपडेरणखा लीऔरंगधूअडग ॥ तखतादिलीअलआलीदादन रतुकरा ॥ उमरावौंवेहालीरंकोसरफराज ॥ जीता

जंगकरालीकरमकरीमदे ॥ बरमरदुमखुदआली चाहेसोकरै ॥ कितरेहालकहालीरतनेरदनदा॥१॥

सोरठा—खागाँबलखेडेचतै,झंझियोआरगतुरक ॥ घणपडदांविचघेच, अथमायोमाहेशउत ॥ १ ॥ औरँगआगब्रजाग, प्रलैकालपसर्योप्रथी ॥ लूवाँ चरसणलाग, सुरपतदूजोरतनसी ॥ २ ॥ औरँग अडआकाश, हिल्लोहलकरहालियो ॥ सीहाउतक रहास, ऊफणतोराख्योअबल ॥ ३ ॥ औरंगगयण अधार, भुजातोलआयोभिडण ॥ जहरशंकराजिम जार, ऊभोतूँमाहेशउत ॥ ४ ॥ रयणागिरराठोड, बलकाढ्योतैबीबरो ॥लडलोहाँसूँलोड,पाधरतैकी धोप्रगट ॥ ५ ॥ छाकियोगजछंछाल, औरँगयूँडा णाँलग्यो ॥ रतनलँगरपगलार, तैंबाँध्योमाहेशत ण॥ ६ ॥ औरँगलहरअथाह, चढीघणीचोंडाहरा॥ गयंदखुराँसूगाह, तैदाबीमाहेशतण ॥ ७॥ औरं गभमंगअथाह, बाईवंधवादीवणे ॥ सेलउडदक

रसाह, कंडियाबिचघाल्योकमध ॥ ८ ॥ हरणाइ कपतसाह,धूध करेदाटीधरा ॥ बाँईबंधवाराह, तैंकाढमिाहेशतण ॥९ ॥ औरँगतिमिरअपार, पस न्योपलऊपरप्रबल ॥ जकेअँधारोजार, तूँऊगोमा हेशतण ॥ १० ॥

इति श्रीमहाराजकुमारश्रीश्री १०८ श्रीरत्नसिंहजीकृत नटनागरविनोदसंपूर्णम् ॥

पुस्तकमिलनेकाठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर"छापाखाना-(बम्बई.)